चन्दामामा
अप्रैल १९९६
Rs
5

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स

डायमण्ड कॉमिक्स

की ओर से

मुफ्त!

चाचा चौधरी

रंगीन

पोस्ट-कार्ड

सचिन तेंदुलकर

प्रतियोगिता

में हिस्सा लीजिये!

और हजारों रुपये के इनाम जीतिये

नये डायमण्ड कॉमिक्स

प्राण का–चाचा चौधरी और वर्ल्ड कप
प्राण का–बिल्लू का स्कूल
प्राण का–राबू और नोबोराग का सफर
अग्निपुत्र अभय और ब्लैक ब्रिगेड
फौलादी सिंह और ग्रैण्ड मास्टर
लम्बू मोटू और बागोटा की दुष्टात्मा
चाचा भतीजा और दानव लोक में हंगामा
मोटू पतलू और मौत का साया
मैण्ड्रेक-40, जेम्स बाण्ड-43 फैण्टम-53
महाबली शाका और ब्लैक टाईगर
राजन इकबाल और कब्र का रहस्य
मोटू छोटू और रॉक एन रोल
ताऊजी और गज वानर
मैण्ड्रेक-41, जेम्स बाण्ड-44 फैण्टम-54

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक

हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-) लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।

1 वर्ष में महीने	बचत (रु.)	कुल बचत (रु.)
12	4/- (छूट)	48.00
12	7/- (डाक व्यय)	84.00
1	48/- (13वीं वी.पी. फ्री)	48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक		20.00
'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री		
		200.00

सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ______________________

पता ______________________

____

डाक ________ जिला ________ पिनकोड ________

सदस्यता रु. शुल्क 10 डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म दिन ______________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

डायनोज़ को घर ले आएं,

थोड़ा खेलें, थोड़ा डराएं.

अब आपके मनपसंद रसना के 11 फ़्लेवर्स का दुगुना स्वाद लीजिए. रसना सॉफ़्ट ड्रिंक कॉन्सन्ट्रेट के स्टॅन्डर्ड पॅक्स पर छपे रसना डायनो गेम के पांच कूपन अदा करने पर आपको एक रोमांचक डायनो स्केर गेम फ़्री मिलेगा. अब आप कहते ही रहेंगे 'आय लव यू रसना'.

- रसना स्टॅन्डर्ड पॅक्स इस ऑफ़र के बिना भी उपलब्ध.
- यह ऑफ़र केवल 31 अगस्त 1996 तक लागू रहेगी.

Mudra:EAMR:9266 HI

(पहले परीक्षा करें योजना)

७ दिनों की औषधि फ्री

सफेद दाग

वर्षों लगातार परिश्रम, खोज के बाद सफेद दाग की चिकित्सा में सफलता प्राप्त की है। यह इतनी तेज व प्रभावी है कि इलाज शुरू होते ही दाग का रंग बदलने लगता है और शीघ्र ही दाग होने वाली कारणों को दूर करते हुए, चमड़ी के रंगों में सदा के लिए मिला देता है। अभी प्रचार हेतू **''पहले परीक्षा करे योजना'' के अन्तर्गत ७ दिनों की औषधि फ्री दी जा रही है।** ताकि पहले परीक्षण कर गुण को देख लें, संतुष्ट हो लें, तब इलाज करावें। इसलिए निराश रोगी एवं कहीं से चिकित्सा करा रहे रोगी भी इस योजना का लाभ अवश्य उठावें। **रोगी का उम्र, दागों का स्थान एवं कितने दिनों से है अवश्य लिखकर भेजें।**

पहले परीक्षा करें योजना

भड़ते पकते बालों का इलाज

यदि असमय में किसी भी कारण से बाल झड़ रहे हैं या पक रहे हैं तो चिन्ता न करें। प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथों के परीक्षित नुस्खों के आधार पर तैयार की गई शक्तिशाली योग के प्रयोग से बालों का गिरना व बालों का सफेद होना जड़ से रुक जाता है उसके स्थान पर नये बाल आने लगते हैं एवं बाल काले हो जाते हैं।

मस्तिष्क को ठण्डा रखता है स्मरण शक्ति को तीव्र करता है। उम्र, कितने दिनों से बाल सम्बन्धी रोग है ? स्त्री व पुरुष किसे रोग है ? चिकित्सा या परामर्श हेतू लिखें। कीमत रु. १००/- स्पेशल रु. १५०/-

गया आयुर्वेद भवन

(SB-3) पो. कतरी सराय (गया) - ८०५ १०५

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

मधुर संगीत

अगर विद्यार्थियों को संगीत सिखाया जाए तो वे ना ही कोई शरारत करेंगे या ना ही कोई अपराध। यह विचार व्यक्त किया है, भारत के एक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ ने। उनके विचारों में शेक्सपियर की भावनाएँ प्रतिध्वनित होती सी लग रही हैं। शेक्सपियर ने कहा "जिस मनुष्य में संगीत ना हो, वह विश्वासघात, कुतंत्र तथा विनाश करने की क्षमता रखता है।"

भारतीय कलाकारों का विश्वास है कि संगीत, प्रकृति से उत्पन्न हुआ है। संगीत मूलतः ध्वनि है। सरसराती हवा, कलरव करता बहता जल, मधुर ध्वनि से हिलते पत्ते इसके साक्षी हैं। पक्षियों की चहक पक्षी-गीत कहा जाता है। सिंह की गरज, बाघ की गुर्राहट, हाथी की चिंघाड़ हमें पहले भयभीत कर देते हैं। पर, जब ये ध्वनियाँ लगातार जब सुनने लगते है, तब उनमें संगीत सुनायी पड़ता है।

गायक और श्रोता भी गाते और सुनते हुए मुग्ध होते हैं। वह अमृत-धारा है। भला क्यों मानव ऐसी अद्भुत कला के होते हुए ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता, बेईमानदारी के वश हो जाए। ये ही तो अपराध करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देते हैं।

संगीत में मनुष्य लीन हो जाता है। यह उसके मस्तिष्क और मन को पवित्र रखता है। समानता की भावना को बढ़ावा देता है। ऐसे पवित्र मस्तिष्कों में शरारत या अपराध-प्रवृत्ति के लिए कोई स्थान नहीं।

वर्ष : ४९ अप्रैल १९९६ अंक : ८

एक प्रति : रु. ५/- वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

CLUB • YOUNG SCHOLARS' CLUB • YOUNG SCHOLARS' CLUB • YOUNG
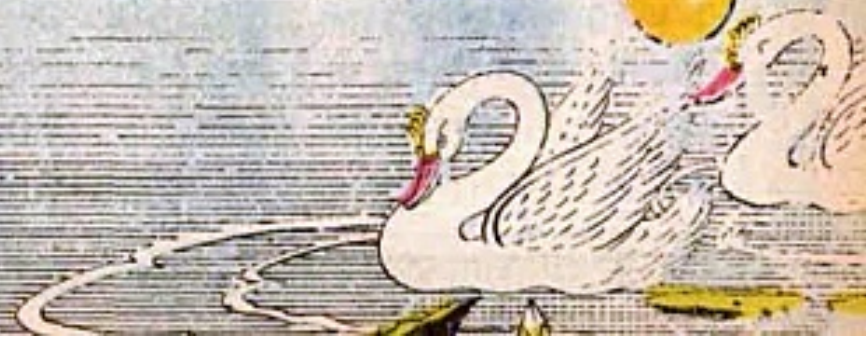
If you are a subscriber of *Chandamama* (in any language) and if you are between 6 and 16 years of age, you are eligible to enrol yourself a member of the Chandamama Young Scholars' Club. Please fill up the form below and mail it to us, while sending a token fee of Rs. 50 either by M.O. or by bank draft in the name of Chandamama Young Scholars' Club, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026. Alternatively if you subscribe to *Chandamama* (in any language) before May 31, 1996, the offer of membership is open to you. You can then order all six or any number of the *Chandamama* books (see back cover) at 25% discount. Packing and postage will be free. If you order all the six books, you get a discount of 30%. You also get a gift of an attractive badge, a decent-looking Membership Card, Membership Certificate, and a handy notebook. What is more, you can participate in talent contests and different activities which the Club will hold.

Dear Sir,

❑ My *Chandamama* subscription No. is........................Please enrol me a member of the **Chandamama Young Scholars' Club.** I am sending my Membership fee of Rs. 50 by M.O./Draft.

❑ I wish to become a subscriber of *Chandamama* (in..language). I am sending by M.O./Draft. Rs. 110 towards one-year subscription (Rs. 60) and Membership fee (Rs. 50).

(Tick whichever is applicable)

Signature

Full Name : ....

Name of Parent : ....

Mailing Address : ....

Permanent Address : ....

....Date of Birth : ....

Class : ....School : ....

YOUNG SCHOLARS' CLUB • YOUNG SCHOLARS' CLUB • YOUNG SCHOLARS'

समाचार - विशेषताएँ

पालीस्तीन के अध्यक्ष

अरब का छोटा देश है पालीस्तीन। यासर अराफत इसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये। जनवरी २०, को संपन्न आम चुनावों में ८८ सदस्यों के एक कौन्सिल का भी चुनाव हुआ। अराफ़त के नेतृत्व में स्थापित फताहा दल को इस चुनाव में काफ़ी अत्यधिकता मिली।

अराफत का पूरा नाम है - अब्दुल रहमान अराफत अलकुद्वय। १९४८ में इज़राइल बना। पालीस्तीनियों को मातृभूमि से भगाया गया। उस समय अराफत कैरो विश्वविद्यालय में इंजनीयरिंग पढ़ रहे थे। उस समय वे बीस साल की उम्र के युवक थे। अपने देशवासियों पर हो रहे अत्याचारों को वे सह नहीं सके। अरब की राष्ट्रीयता से वे प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी। अपनी जनता को मातृभूमि सौंपने का बीड़ा उठा लिया। इस महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने पालीस्तीन विमोचन संस्था की (पी.एल.ओ.) स्थापना की। कुछ समय तक वे उसके अध्यक्ष भी बने रहे।

पहले पहल उन्होंने इज़राइल के आक्रमणकारों के विरुद्ध गोरिल्ला युद्ध प्रारंभ किया। इससे उनपर छाप पड़ गयी कि ये बहुत ही बड़े उग्रवादी हैं। इसके बाद वे इज़राइल की सेनाओं से प्रत्यक्ष युद्ध की तैयारी में जुट गये और कुछ हद तक सफलता भी पायी। इससे वे पालीस्तीनियों के प्रेम के पात्र बने। १९७४ में अराफत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल असेंब्ली में भाषण दिया। तब उन्होंने शांति के चिह्न जैतन की टहनी को ले अपने हाथ में रखकर कहा "इस जैतन टहनी को मेरे हाथ से फिसलने न दीजिये।"

इज़राइल ने पी.एल.ओ को मान्यता नहीं दी। एक प्रकार से दोनों ने एक दूसरे को मान्यता नहीं दी। इसलिए लड़ाई जारी रही। दोनों पक्षों ने विजय की घोषणा की। पराजय भी स्वीकार की। दोनों देशों में समझौता करने के लिए कुछ देश आगे बढ़े। फलस्वरूप अराफत ने १९८८ में संयुक्त राष्ट्र संघ में इज़राइल को देश के रूप में मान्यता देने की स्वीकृति दी। उनकी इस स्वीकृति से संसार के बहुत देशों में उनका आदर बढ़ा और वे विज्ञ व्यक्ति माने जाने लगे।

१९९३ में 'पालीस्तीन अथारटी' क़ायम हुई। पी.एल.ओ. और इज़राइल के बीच समझौते की बातचीत शुरू हुई। १९९५, सितंबर, २९ को अराफत और इजराइल के विदेश मंत्री सैमन फेरिज ने एक समझौते पर दस्तख़त किया। पश्चिमी तट के गाजा स्ट्रिप जैसे कुछ स्वाधीन प्रांतों से इज़राइल की सेना हटने लगी। वहाँ पालीस्तीनियों के अधिकारों का पुनरुद्धार हुआ। वहाँ लोकतंत्र की स्थापना के लिए आम चुनाव हुए।

पालीस्तीन बहुत ही प्राचीन प्रदेश है। पश्चिमी तट के जेरोको में लगभग ९००० सालों के पहले मानवों ने प्रप्रथम अपना निवास बनाया। इसके ऐतिहासिक आधार भी हैं।

हाल ही में जो चुनाव हुए, उसमें अराफत के खिलाव चुनाव लड़ीं, प्रतिपक्ष की बहत्तर साल की श्रीमती समीहा खलील। इन्होंने दस प्रतिशत मत पाये। अराफत को ८८ प्रतिशत मत मिले।

पी.एल.ओ. और इजराइल के बीच समझौता करने में ईजिप्ट ने प्रमुख पात्र अदा किया। ईजिप्ट के नेताओं का मानना है कि स्वतंत्र पालीस्तीन के निर्माण में ये चुनाव पहला क़दम है।

आदमी आख़िर जायेगा कहाँ?

जुगल, जसगाँव पहुँचा। वह अपने साथ कुछ नहीं लाया। आश्रय माँगने वह ग्रामाधिकारी के पास गया। उसने भूषण का खाली घर उसे दिलवाया और कहा कि गाँव में काम करो और अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो।

जुगल पहले भूषण के घर गया और उससे कहा, "मालिक, आपका घर मुझे बहुत अच्छा लगा। वहाँ मैं आराम से हूँ। किराया चुकाये बिना वहाँ रहना मुझे अच्छा लग नहीं रहा है। कोई काम हो तो कृपया आप मुझे बताइये। मैं आपका काम ज़रूर कर दूँगा।"

भूषण ने हँसकर कहा "मेरे भाई की शादी हुई तो सोचा कि वह अलग घर में रहना चाहेगा, इसीलिए मैंने वह घर खरीदा था। पर वह तो शहर चला गया और वहीं रहने लगा। घर में आदमी न हो तो घर उजड़ जायेगा। बहुत से नौकरों को रखा, जो उस घर की देखभाल कर रहे हैं। इसपर बहुत खर्चा भी हो रहा है। तुम रहोगे तो वह खर्चा कम हो जाएगा। उसी को मैं किराया मान लूँगा। बिना किसी झिझक के उसी घर में रहो।"

"फिर भी मैं समझता हूँ कि मैं आपका कर्ज़दार हूँ। जब मेरे अच्छे दिन आयेंगे, तब ज़रूर आपका कर्ज़ चुकाऊँगा।" जुगल ने कहा। वह गाँव के लोगों के घरों पर जाता रहा और नौकरी के लिए प्रार्थना करता रहा।

पहले जिस घर पर वह गया, वह सीताकर नामक एक कवि का घर था। उसने जुगल से कहा "मैं कवि हूँ। काव्य रचकर भाग्यवानों को समर्पित करता हूँ। वे मुझे धन देते हैं। उस धन से मैं अपने दिन आराम से गुज़ार रहा हूँ। एक औरत

कमलाकर

मेरी पत्नी की सहायता के लिए नियुक्त है। घर में कोई और काम नहीं हैं, जिसके लिए मैं तुम्हारी सेवाएँ लूँ। बुरा ना मानना।"

"महाशय, आपका घर काफ़ी बड़ा लग रहा है। पिछवाड़ा भी विशाल दीख रहा है। मुझे नौकरी देंगे तो आपके बगीचे का काम संभालूँगा। आप काम नहीं देंगे तो मैं बेकार ही रह जाऊँगा।" जुगल ने कहा।

सीताकर ने जुगल को आश्चर्य-भरी नज़रों से देखा। उसे लगा कि वह पढ़ा-लिखा है। देखने में तो नहीं लगता कि वह मेहनत कर पायेगा। हाँ, बात तो सच है कि आवश्यकता आदमी से कुछ भी कराती है। ऐसा सोचकर उसने जुगल से कहा, "बगीचे का काम मैं खुद संभाल लेता हूँ। वही मेरे लिए शारीरिक व्यायाम है। इतनी भी कसरत नहीं रही तो तबीयत के खराब हो जाने का ख़तरा है। तुम अपनी जीविका के बारे में इतना मत घबराओ। जब तक तुम्हें कोई काम नहीं मिलता तब तक मेरे ही घर भोजन करते रहो। भगवान की कृपा से अन्न की कोई कमी नहीं।"

जुगल ने सीताकर को नमस्कार करते हुए कहा "आपका हार्दिक धन्यवाद। किसी भी के घर में मुफ़्त में खाना मुझे अच्छा नहीं लगता। आपको मुझपर विश्वास हो तो जब-जब माँगूँगा, कर्ज़ देते रहिये। जब मेरे अच्छे दिन निकल आयेंगे, आपका

कर्ज़ चुकाऊँगा।" कहकर वह सीताकर के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना दूसरे के घर गया।

यह घर एक व्यापारी का था। उसके घर में भी उसे काम नहीं मिला। सीताकर की तरह उसने भी वैसी ही बातें कही। जुगल ने भी वे ही बातें कहीं, जो सीताकर से बतायी थीं।

इस तरह से गाँव के अनेकों घरों के मालिकों से वह मिला। घूमते-घूमते वह थक गया और एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। उधर से गुज़रते हुए ग्रामाधिकारी ने उसे देखा तो पूछा "क्या कहीं काम मिला?"

ग्रामाधिकारी ने हँसते हुए कहा "तुम क्या ला सकोगे?"

"जिस गाँव में मैं जा रहा हूँ, वहाँ ललितांबिका नामक एक देवी है। वह किसी भी प्रकार की इच्छा पूरी करती है" जुगल ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

"बताओ कि वह गाँव कहाँ है? मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा। मेरी एक इच्छा है, जो स्वयं देवी से व्यक्त करना चाहता हूँ।" ग्रामाधिकारी ने कहा।

"अभी तक कोई भी उस गाँव में नहीं आया। उस देवी का दर्शन अब तक किसी ने नहीं किया। मुझसे बताइये कि आपकी क्या इच्छा है। आपकी तरफ़ से मैं देवी से माँगूंगा।" जुगल ने कहा।

"मेरा विवाह हुए दस साल हो गये। अब तक मेरी पत्नी माँ नहीं बन सकी। देवी क्या संतान प्रदान कर सकती हैं?" ग्रामाधिकारी ने पूछा।

जुगल ने कहा "अवश्य"।

ग्रामाधिकारी ने तुरंत मुनादी पिटवायी कि जुगल गाँववालों से ज़रूरी बात करना चाहता है। शाम को गाँव के सब लोग एक जगह पर इकट्ठे हो गये। जुगल ने उनको संबोधित करते हुए कहा "मनुष्यों को यह संदेह होता रहता है कि भगवान है या नहीं। वह है, अवश्य है। अच्छाई को वह प्रोत्साहन देता है और बुराई का खंडन करता है। बुरे लोगों को वह दंड भी देता है। इस गाँव के सब निवासी अच्छे लोग हैं, इसलिए वह आप सबका भला करेगा। आप अपनी-अपनी इच्छाएँ मुझसे बताइये। मैं ललितांबिका देवी को आपकी इच्छाएँ बताऊँगा।"

गाँव के सब लोग एक के बाद एक खड़े हुए और अपनी-अपनी इच्छाएँ बताते गये। एक की माँ लंबे अर्से से बीमार है। वह चाहता है कि वह ठीक हो जाए। एक स्त्री का पति क्रुद्ध स्वभाव का है। वह चाहती है कि पति शांत स्वभाव का हो जाए।

कुछ लोगों ने व्यक्तिगत इच्छाएँ प्रकट कीं तो कुछ लोगों ने गाँव से संबंधित

"महाशय, आपका गाँव महान है। सब ग्रामवासी अपना काम आप ही संभाल रहे हैं। इसलिए कहीं भी मुझे काम नहीं मिला।" उसने जो हुआ, ग्रामाधिकारी को बताया।

"हरे रोज़ एक-एक घर में खाते जाना। तुम्हारे दिन आराम से कट जाएँगे।" ग्रामाधिकारी ने सुझाव दिया।

"बिना काम किये मुफ़्त खाना मुझसे नहीं हो पायेगा। बिना खाये उपवास रखने की मुझमें शक्ति है।" जुगल ने कहा।

ग्रामाधिकारी को ताज्जुब हुआ और उसने जुगल को ग़ौर से देखा। उसे वह साधारण व्यक्ति-सा नहीं लगा। उसने ठान लिया कि ऐसे आत्माभिमानी का आदर गाँव में अवश्य हो।

ग्रामाधिकारी ने तुरंत गाँव के प्रमुखों को बुलाया। जुगल के बारे में उनसे बताते हुए कहा "यह स्वाभिमानी व्यक्ति है। दान नहीं लेता। हमारे गाँव में वह भूखा रहे, यह हमारे लिए अच्छा नहीं है। अतः हम सब मिलजुलकर उसकी सहायता करेंगे। हर दिन एक-एक के घर में काम देंगे और खाना खिलायेंगे।"

गाँव के प्रमुखों ने इस प्रस्ताव को मान लिया। यों जुगल को काम मिल गया। उसे भरपेट खाना भी मिलने लगा। किन्तु जुगल इससे तृप्त नहीं हुआ। वह हर दिन किसी ना किसी से कर्ज़ लेता रहा। एक से एक अशर्फ़ी ली तो दूसरे से सौ अशर्फ़ियाँ लीं। सबसे वह वादा करता रहा कि अपने अच्छे दिन जब आयेंगे, तब कर्ज़ चुका दूँगा। पर उसने कर्ज़ चुकाया ही नहीं। विचित्र बात तो यह है कि किसी ने भी कभी भी कर्ज़ चुकाने के लिए उसपर दबाव नहीं डाला। उसे किसी ने याद भी नहीं दिलायी कि तुमसे हमें पैसे मिलने हैं।

यों एक साल बीत गया। एक दिन जुगल ने ग्रामाधिकारी से मिलकर कहा "मैं अपना गाँव जा रहा हूँ। गाँव के लोगों को इकट्ठा कीजिये। जिन-जिनको जो-जो चाहिये, लाकर दूँगा।"

थी कि देवी के द्वारा लोगों की इच्छाओं की पूर्ति करूँ। इसी काम पर मैं बरकतपुर गया और वहाँ एक साल रहा, जैसे यहाँ हूँ। उनसे मैंने तीन हज़ार आशर्फ़ियाँ कर्ज़ में लीं। वहाँ भी चंद्रपुर के लोगों की तरह उस गाँव के लोगों ने भी मुझे गाँव से जाने नहीं दिया। मैं सबकी आँखों से छिपकर बरकतपुर गया और ब्याज सहित कर्ज चुकाया। इसके बाद मैं आपके गाँव आया। अब मेरे पास बारह हज़ार अशर्फ़ियाँ हैं। यह धन लेकर चंद्रपुर जाऊँगा और उनका कर्ज़ चुका दूँगा। मैं चाहता था कि यहाँ से सीधे अपना गाँव जाऊँ और ललितांबिका देवी के दर्शन करूँ। आपकी इच्छाएँ उनसे बताऊँ और उनकी पूर्ति करूँ। इतने में यह नील आ गया। बस, यही मेरी कहानी है।''

नील ने कहा ''झूठ कह रहा है। बारह हज़ार अशर्फियाँ लेकर यहाँ से भाग जाना चाहता है। मेरे आ जाने से तेरा भंडा फूट गया।''

''ऐसी ग़लत बातें मत कर नील। सच क्या है और झूठ क्या, इसका निर्णय तो भगवान के हाथों में है। मैंने तुम्हारे गाँववालों के लिए जो धन जमा किया, खुद आकर दूँगा। सबको दुगुना चुकाऊँगा। अब तो मेरा एतबार करो।'' जुगल ने कहा।

''तो क्या एक और गाँव जाकर बारह हज़ार अशर्फियाँ जमा करोगे और इन ग्रामवासियों को दोगे? यह धांधली कब तक चलेगी। मैं चुप बैठनेवाला नहीं हूँ। तुम्हें पुलिस के हवाले करूँगा। तभी मेरे मन को शांति मिलेगी।'' नील ने कहा।

ग्रामाधिकारी ने दख़ल देते हुए कहा ''नील, यह गाँव हरा-भरा है। हम अच्छाई में विश्वास रखते हैं। हमारा विश्वास है कि जुगल अच्छा आदमी है। हमने इसे धन दिया, इसका हमें कोई खेद नहीं है। यह चाहता है कि कर्ज चुकाऊँ और प्रतिफल दूँ। यह शायद सोचता है कि यह हमारा कर्ज़दार है, परंतु असल में ऐसी कोई बात नहीं। तुम्हारे ग्रामवासियों का कर्ज़ जब यह चुका देगा, तब इसे छोड़ दो।

थी कि मंदिर फिर से खड़ा किया जाए। वह पूर्ववत् वैभव प्राप्त करे।

इस प्रकार अपनी-अपनी इच्छाएँ लोग जुगल को बताने में लगे थे तो तब वहाँ एक आदमी आया। वह काला, ऊँचा और मज़बूत था। जुगल को देखते ही उसने पूछा "तुम यहाँ हो?"

ग्रामाधिकारी ने उसे अपने पास बुलाया और विवरण पूछा। उसका नाम था नील। वह चंद्रपुर का निवासी था। जुगल उस गाँव में एक साल तक रहा। उसने लोगों से बहुत कर्ज़ लिया। इसी तरह वह एक दिन अचानक गाँव से निकल पड़ा और जाते-जाते लोगों से कहा कि ललितांबिका देवी को आपकी

इच्छाएँ प्रकट कीं।

इस गाँव में पीने का पानी नहीं है। जितने भी कुएँ हैं, उनमें नमकीन पानी ही है। अच्छे पानी के लिए गाँव के बाहर की नहर के पास जाना पड़ता है। इसलिए कुछ लोगों की इच्छा थी कि गाँव में मीठे पानी के कुएँ हों। कुछ लोगों ने कहा कि पगडंडियों के बग़ल के पौधे मर रहे हैं। उनकी इच्छा थी कि छाँव देनेवाले पेड़ जीवित होकर बड़े हों। इस गाँव का मंदिर उजड़ गया है। कहा जाता है कि देवशिल्पों को ही इसकी मरम्मत करनी चाहिये। ऐसी शिथिल स्थिति में मंदिर के गिर जाने से गाँव को नष्ट पहुँचेगा। इसलिए उनकी चाह

इच्छाएँ बताऊँगा और उनकी पूर्ति करावूँगा। गाँव के लोगों को उसपर संदेह हुआ और उन्होंने माँग की कि पहले उनके कर्ज़ चुकाये जाएँ। बस, उसी रात को जुगल गाँव से रफूचक्कर हो गया। गाँव के लोगों ने उसे पकड़कर ले आने की जिम्मेदारी नील को सौंपी।

ग्रामाधिकारी ने जुगल से पूछा "नील की कही बातें क्या सच हैं?" जुगल ने 'हाँ' के भाव में सर हिलाया।

ग्रामाधिकारी ने उससे पूछा "तुमने ऐसा क्यों किया?" जुगल ने उत्तर दिया "मैं ललितांबिका देवी का भक्त हूँ। मेरी इच्छा

१
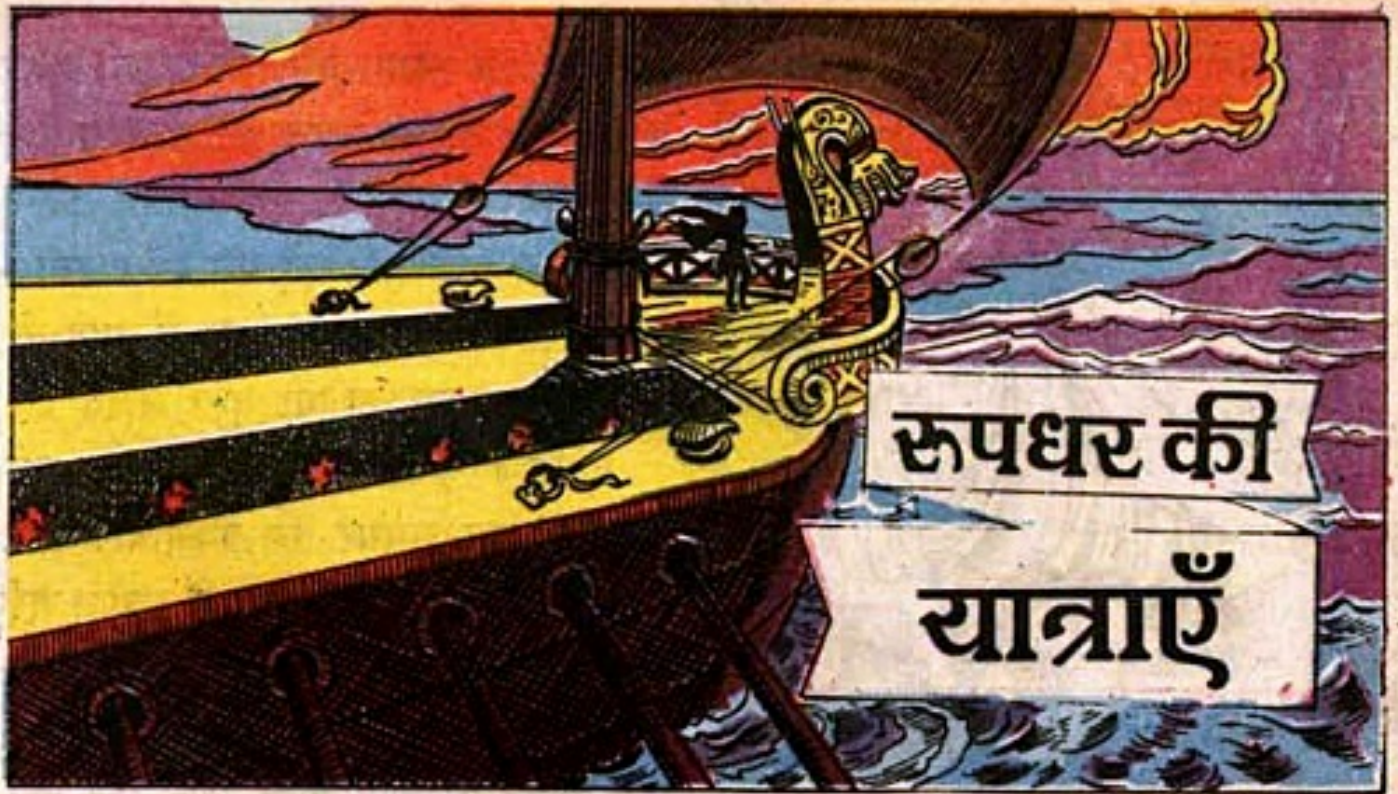
(सूर्यभगवान के पशुओं को मारकर खाया रूपधर के अनुचरों ने। ऐसा करके उन्होंने बड़ा पाप किया। इस कारण वे सबके सब नौका सहित डूब मरे। रूपधर मात्र बच गया और किनारे पर आ पाया। वहाँ उसकी मुलाक़ात उस देश की राजकुमारी वारुणी से हुई। उसकी सहायता से वह राजभवन पहुँचा और आश्रय पाया। राजा बुद्धिमान ने वादा किया कि उसे सब प्रकार की सुविधाएँ और सहायता मिलेंगीं। उस रात को रूपधर शांत सो गया।) - बाद

दूसरे दिन सबेरे बुद्धिमान के साथ-साथ रूपधर भी जागा। दोनों मिलकर सभास्थल गये। वह सभा-भवन बंदरगाह के पास ही था। उसमें संगमरमर के आसन थे। बुद्धिमान एक आसन पर बैठा और रूपधर को बग़ल के आसन पर बैठने को कहा। इस बीच राजा का एक दूत रूपधर की यात्रा के लिए आवश्यक प्रबंध करने नगर में गया। उसने नगर में जाकर हर प्रमुख को प्रत्येक रूप से आह्वानित किया और उनसे कहा कि एक अपूर्व व्यक्ति राजा का अतिथि बनकर आया हुआ है।

उस नये व्यक्ति को देखने के लिए सब प्रमुख व्यक्ति वहाँ आये। देखते-देखते सब आसनों पर वे विराजमान हुए। वहाँ समाविष्ट व्यक्तियों से राजा ने कहा "महाजनो, मेरे बग़ल में आसीन यह व्यक्ति मेरे अतिथि हैं। मुझे नहीं मालूम कि ये

ऐसा न करने पर वह ललितांबिका देवी के दर्शन करेगा और तुम्हारे गाँव को नुक़सान पहुँचायेगा।"

नील ने नकारात्मक ढंग से अपना सर हिलाते हुए कहा "क्या गारंटी है कि वह दूसरे गाँव में नहीं जायेगा और वहाँ के लोगों को धोखा नहीं देगा? जब यह ललितांबिका देवी के द्वारा उपकार करा सकता है तो अपना कर्ज़ चुकाने के लिए गाँव-गाँव में भटकने की क्या ज़रूरत है? लोगों को लूटने की क्या आवश्यकता है?"

ग्रामाधिकारी ने हँसकर कहा "जब यह बरकतपुर से भाग रहा था तब वहाँ के लोगों ने इसपर दबाव डाला कि कर्ज़ चुकाकर ही गाँव से बाहर जा सकते हो। इसीलिए वह तुम्हारा चंद्रपुर आया। तुम लोगों ने भी कर्ज़ चुकाने पर ज़ोर दिया, ज़बरदस्ती की। इसलिए वह हमारा गाँव आया। हम तो बता रहे हैं कि इसे हमें कोई कर्ज़ चुकाना नहीं है। अब तो वह ललितांबिका देवी का गाँव ही जायेगा। हमारी इच्छाएँ पूरी करने के लिए उसकी शरण में जाने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं। यही हमारा विश्वास है। हमारा विश्वास सच न भी हो तो भी हमें दुख नहीं होगा।"

जुगल ने ग्रामाधिकारी को अपनी कृतज्ञता जतायी और नील के साथ निकल पड़ा। चंद्रपुर पहुँचने पर उसने पाई-पाई चुका दी।

इसके कुछ समय बाद जसगाँव के ग्रामाधिकारी का लड़का हुआ। सबकी अपनी-अपनी इच्छाएँ पूरी हुईं। गाँव का खारा पानी मीठे पानी में बदल गया। जसगाँव के लोग जुगल की वाहवाही करने लगे और उसकी महानता का प्रचार करने लगे। इसके बाद तो बहुत-से गाँववालों ने उसका स्वागत करना चाहा, पर पता नहीं चला कि वह कहाँ है। बरकतपुर और चंद्रपुर के लोग अब भी पछता रहे हैं कि अच्छा अवकाश खो दिया।

भोजन के समय रूपधर और वज्रकाय में झगड़ा उठ खड़ा हुआ और दोनों ने एक दूसरे को खूब गालियाँ दीं। रराजा को इस घटना पर दुख नहीं हुआ उल्टे वह खुश हुआ। क्योंकि सूर्यभगवान पहले ही बता चुके थे कि यह शुभसूचक है। अंधे गायक ने उक्त घटना को अपने गीत का विषय बनाकर गीत रचा और गाया। उस गीत को सुनते हुए रूपधर में दुख उमड़ आया। वह नहीं चाहता था कि वहाँ उपस्थित लोग उसके आँसू देखें, इसलिए उसने कपड़े से अपना मुख छिपा लिया। बीच-बीच में जब गायक गाते-गाते रुक जाता था तो आँसू पोंछकर अपने मुख से वह कपड़ा हटा लेता था। फिर जैसे ही गायक गाने लगता था तो उसकी आँखों से अश्रुधारा बहती थी।

रूपधर की इन चेष्टाओं की ओर किसी की नज़र नहीं गयी, पर बगल में बैठे राजा बुद्धिमान ने देख लिया। पीड़ा से निकली रूपधर की कराह भी उसने सुनी।

आख़िर बुद्धिमान ने अपने अतिथियों से कहा "मित्रो, हम पेट भर खा चुके। अब गाना बंद करें और व्यायाम-क्रीडाएँ देखें। अपने अतिथि के लिए प्रत्येक रूप से इनका प्रबंध किया गया है। हमारे अतिथि देखें कि मल्लयुद्ध में हम कितने दक्ष हैं। वे हमारी दक्षता का विवरण अपने देशवासियों को भी सुनाएँगे।"
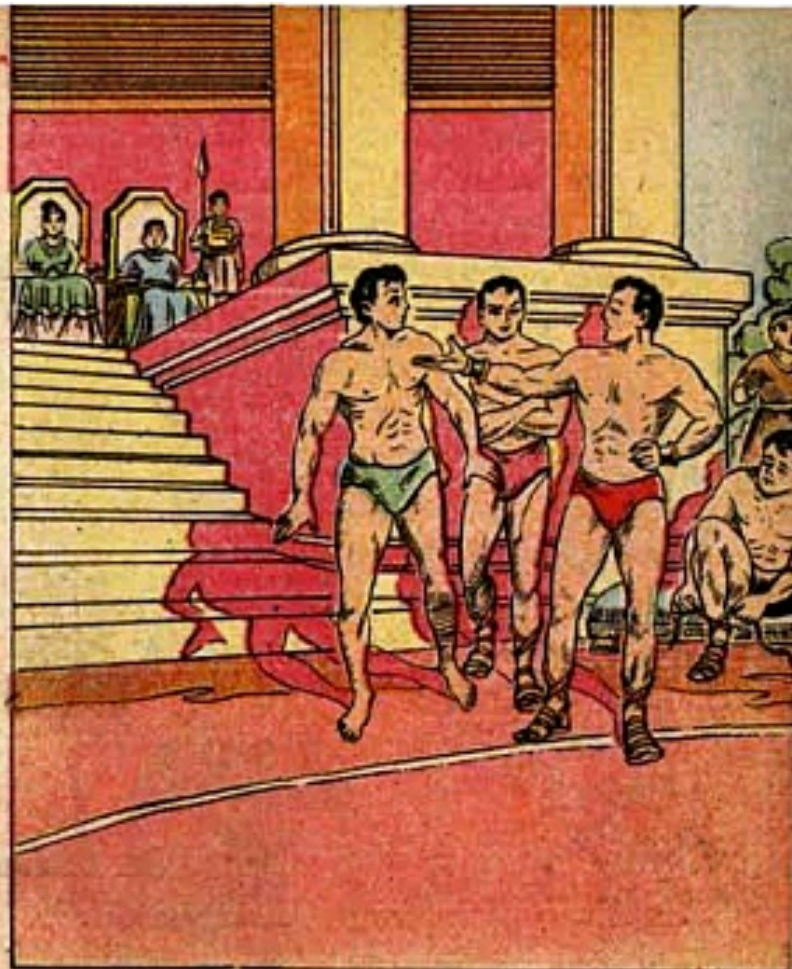
राजा जैसे ही उठा, बाक़ी भी उसके पीछे-पीछे आनंदपूर्वक मैदान की ओर निकले।

वहाँ हज़ारों लोग जमा हुए। व्यायाम-क्रीडाओं में माहिर बहुत-से युवक क्रीडाओं में भाग लेने तैयार खड़े थे।

पहले दौड़ की प्रतियोगिता हुई। फिर मल्लयुद्ध हुआ। बाद भारी चीज़ फेंकने का कार्यक्रम चला। यों तरह-तरह के खेल हुए। मल्लयुद्ध में राजा के बेटे की जीत हुई। उसने अपने अनुचरों से कहा "क्या हम जानें कि हमारे अतिथि ने अपने बचपन में किन-किन क्रीडाओं का अभ्यास किया?

समर्थ हैं, वे जाएँ और आवश्यक प्रबंध करें। फिर भोजन करने मेरे यहाँ आयें। शेष प्रमुख भी मेरे ही यहाँ भोजन करें। इस दावत के इंतज़ाम बड़े पैमाने पर होंगे। इस अवसर पर सुमधुर स्वर में गाने के लिए एक गायक को भी बुला लाइये।"

महाराज बुद्धिमान ने प्रमुखों से बातें कीं और फिर रूपधर को लेकर राजभवन पहुँचा। गायक को ख़बर भेजी गयी। ५२ समर्थ नाविक नयी नावों को पानी में ले आये और आवश्यक प्रबंध किया। उन्होंने गहरे पानी में लंगर डाली और राजभवन लौटे।

कौन हैं ? वे समुद्र से होते हुए आये। मुझे नहीं मालूम कि वे पूर्वी दिशा से आये अथवा पश्चिमी दिशा से। किन्तु उन्होंने अपनी वापसी यात्रा के लिए मुझसे सहायता मांगी। मैं भी वादा कर चुका हूँ कि इसका प्रबंध होगा, क्योंकि अतिथि बनकर जो भी मेरे यहाँ आते हैं, उनकी सहायता करना, उन्हें संतृप्त करना मेरा धर्म है।

आज तक किसी भी अतिथि को मैंने अंसतृप्त नहीं लौटाया। इसलिए हमारी परंपरा के अनुसार इस व्यक्ति की सहायता करना हमारा कर्तव्य है। एक नयी नौका इनके सुपुर्द करेंगे और साथ ही ५२ नाविकों को इनके साथ भेजेंगे। डाँड चलाने में जो

राजभवन के कमरे, प्रांगण आदि अतिथियों से खचाखच भर गया। दावत के लिए बकरे-बकरियाँ, जंगली सुवर व बैल काटे गये। दावत के समय गाने के लिए एक सुँदर अंधा युवक भी उपस्थित हुआ।

जब सब लोग बड़े ही आनंद से खाने में जुटे थे, तब गायक के गाये गीत का विषय रूपधर के जीवन में घटी घटना का ही अंश था, जो यों था।

ट्रोय का युद्ध अभी शुरू नहीं हुआ। राराजा अपना भविष्य जानने के लिए सूर्य का मंदिर गया, जो मैघो के पास था। सूर्यभगवान ने राराजा को बताया कि ट्रोय का पतन होते-होते तुम्हारे योद्धा आपस में लड़ेंगे। और ऐसा हुआ भी। एक दिन
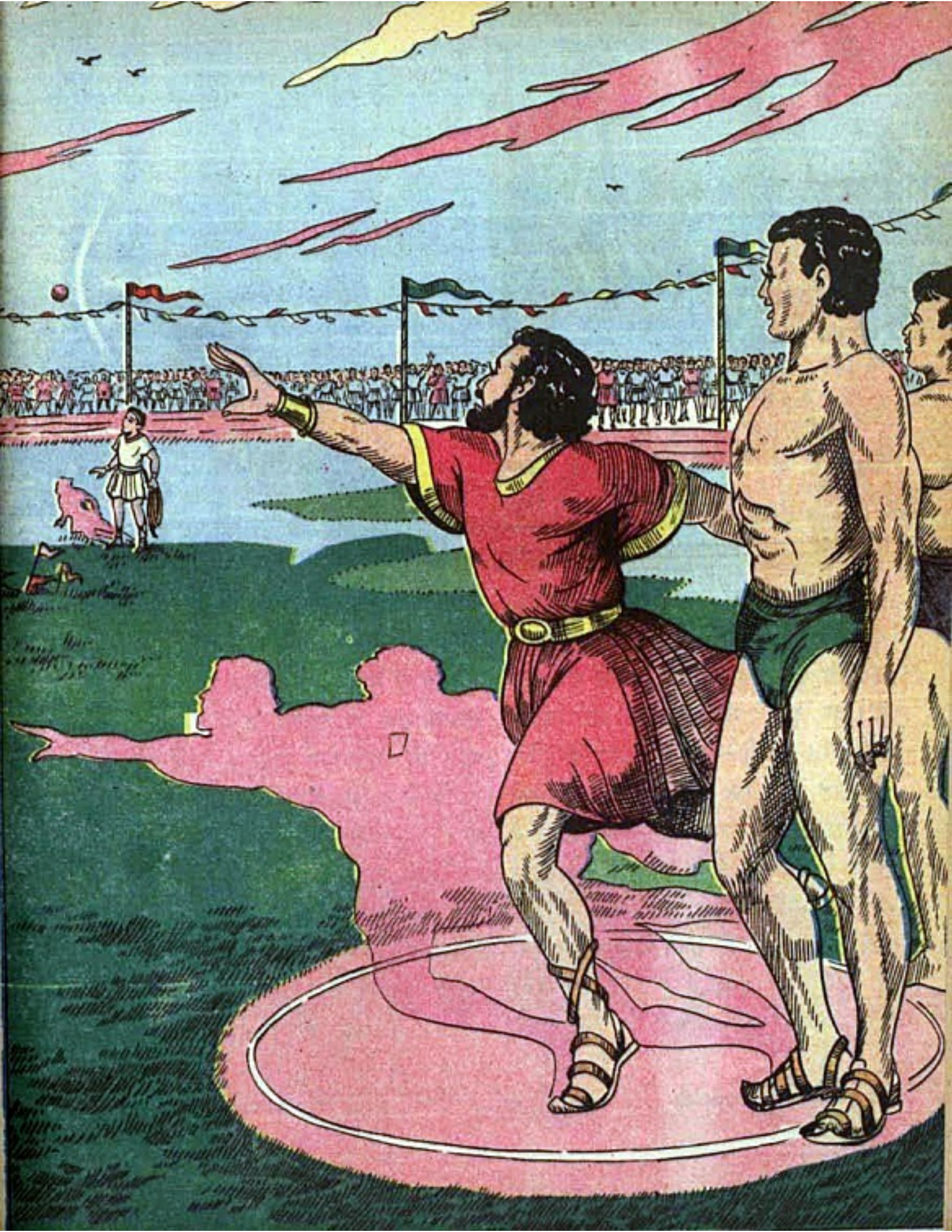
आदमी तो देखने में दृढ़ है। जाँघें, पिंड़लियाँ, गला बलिष्ठ हैं। हाथ भी दृढ़ हैं उम्र से भी बड़े नहीं लगते।" उत्साह-भरे स्वर में उसने कहा।

साथियों ने राजकुमार से कहा "अच्छा, तुम्हीं उनसे पूछो और प्रतियोगिता में भाग लेने को कहो।" वह रूपधर के पास आया और कहा "महाशय, अगर आप व्यायाम-क्रीडाओं से परिचित हों तो आइये। खेलों में भाग लीजिये। व्यायाम-क्रीडाओं की जानकारी हर एक के लिए आवश्यक है। आप निराश व उत्साहहीन दीख रहे हैं। राज़ा अवश्य ही अपना वचन निभायेंगे। आपको सकुशल अपना देश भेजेंगे। आपको अपना देश भेजने के लिए नौका व नाविक तैयार हैं।"

"ऐसी बाते क्यों कर रहे हो? लगता है, तुम सब मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो। कष्टों में फंसा हुआ आदमी हूँ। यह खेल ख़ेलने का समय नहीं है। आपका मेहमान बनकर मैं सिर्फ देख रहा हूँ। उनका आनंद लूटने के लिए नहीं। अब तो मेरा एक ही लक्ष्य है, वह है घर लौटना।"

रूपधर को उकसाने के उद्देश्य से एक युवक ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा "फिर भी लगता है कि आप इन क्रीडाओं से परिचित नहीं हैं। आपको देखने पर और आपकी बातें सुनने पर हमें तो लगता है कि आप समुद्री व्यापारी हैं। जमा-खर्च के अलावा आपको कुछ आता नहीं।"

दूसरे युवक ने कहा "व्यायाम शरीर के लिए अच्छा तो है ही, साथ ही मन के लिए भी अच्छा है। इससे मन को उल्लास मिलता है। मस्तिष्क भी क्रियाशील हो जाता है। इस देश के वासी इसीलिए व्यायाम को इतनी प्रधानता देते हैं। क्या आपके देश में ऐसा नहीं होता? आपको देखते हुए लगता है कि क्रीडाओं में आपको कोई अभिरुचि ही नहीं है। इसी कारण आप निरुत्साही व निराश लग रहे हैं। आपको अपनी इस प्रवृत्ति पर लज्जित होना चाहिये।"

रूपधर सचमुच नाराज़ हो गया। उसने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा "युवक, भगवान कुछ लोगों को विकृत रूप देता है। पर जब वे मुँह खोलते है तो मोतियाँ झडते हैं। उसकी बातें सुनने लोग लालायित हो उठते हैं। कुछ ऐसे होते हैं, जो देखने में सुंदर हैं, पर जब बातें करने लगते हैं तो कानें बंद कर लेनी पड़ती हैं। भगवान ने तुम्हें सुंदर बनाया पर तुम्हें मस्तिष्क नहीं दिया। अनेकों कष्टों से गुज़रता हुआ मैं शुष्क बन गया हूँ। फिर भी तुम्हें दिखाऊँगा कि मुझमें कितनी पटुता है, शक्ति है।"

फ़ौरन वह आसन से उठा और पथ्थर के गोल आकार की एक वस्तु को हाथ में लिया। उसे अपने सिर के चारों ओर घुमाया और दूर फेंका।

दूरी को मापनेवाला युवक उस जगह पर पहुँचा, जहाँ वह वस्तु गिरी। उसने नापने के बाद कहा "महाशय, आप ही ने सब से दूर फेंकी है। किसी से यह संभव नहीं हो पाया। आप विजेता हैं" उसने चिल्लाकर यह बात सबको सुनायी।

रूपधर को खुशी हुई। उसने उत्साह-भरे स्वर में कहा "युवको, पथ्थर के इस गोले को फेंकने में मेरा कोई मुक़ाबला करना चाहे तो आगे आये। मैं पीछे हटनेवालों में से नहीं हूँ। मल्लयुद्ध हो, दौड़ की प्रतियोगिता हो, धनुर्विद्या हो, कोई भी आगे आये और मुझे हराये। युद्धरंग में मुझसे भी अधिक समर्थ धनधव नामक एक ही व्यक्ति था। देवताओं की बात तो नहीं कह सकता, परंतु मानवों में किसी से भी भिडने के लिए मैं सन्नद्ध हूँ।"

किसी ने बात तक नहीं की।

बुद्धिमान ने तब रूपधर से कहा "महाशय, जब कोई दूसरा हमारा मज़ाक उड़ाये, हमारी लापरवाही करे, तब अपने बड़प्पन के बारे में कहना-सुनाना कोई ग़लत काम नहीं है। आपके शक्ति-सामर्थ्य पर उँगली उठाने की योग्यता यहाँ उपस्थित

किसी भी व्यक्ति को नहीं है। हम तो यहीं चाहते है कि जब तक आप यहाँ है, खुश रहे, आनंद लूटें। हाँ, कुछ विद्याओं में हम पिछड़े हैं। मल्लयुद्ध तथा अन्य कुछ व्यायाम-क्रीडाओं में हम प्रवीण नहीं है। हमारी विशिष्टताएँ हैं, नौका-निर्माण, नौकाओं को चलाना, गायन व नृत्य कलाएँ। हम चाहते हैं कि उन्हें आप देखें। घर लौटने के बाद जब आप सपरिवार सुख से समय बिताएँगे, तब इन मधुर क्षणों को याद कर लीजियेगा।''

इसके बाद नृत्य व गायन का आयोजन हुआ। उस देश के नर्तक-नर्तकियों से किये गये बृंद नृत्यों से रूपधर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने बुद्धिमान से कहा ''महाराज, ऐसे अद्भुत नृत्य मैंने आज तक कहीं नहीं देखे।''

रूपधर की प्रशंसा सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने देश के बारह राजकुमारों को बुलाया और उनके द्वारा रूपधर को अच्छे वस्त्र दिलवाये। सोना पुरस्कार में दिलवाया। जिस युवक ने रूपधर पर ताने कसे थे, दंत से बना म्यान और चाँदी से बनी मूँठवाली अपनी तलवार भेंट में दी।

उस दिन रात को अंधे गायक ने 'काठ का घोडा' की कथा अपने गीत द्वारा सुनायी। ग्रीक अपने शिबिरों को जलाकर अपनी नौकाओं में निकल पड़े, यहाँ से शुरु हुआ गीत। उसके बाद ग्रीकों का काठ के घोड़े को ट्रोजन में ले जाने आदि विवरणों से भरपूर था गीत। गीत सुनते-सुनते रूपधर रो पड़ा।

यह देखकर बुद्धिमान ने गाना बंद करवाया और रूपधर से पूछा ''महाशय, सच बताइये। आप कौन हैं? आपका क्या नाम है? किस देश के हैं? आप कहाँ से आ रहे हैं? ट्रोय के युद्ध की गाथा सुनकर आप क्यों इतने दुखी हो गये? क्या उस युद्ध में कहीं आपके कोई सगे-संबंधी मर तो नहीं गये?''

-सशेष
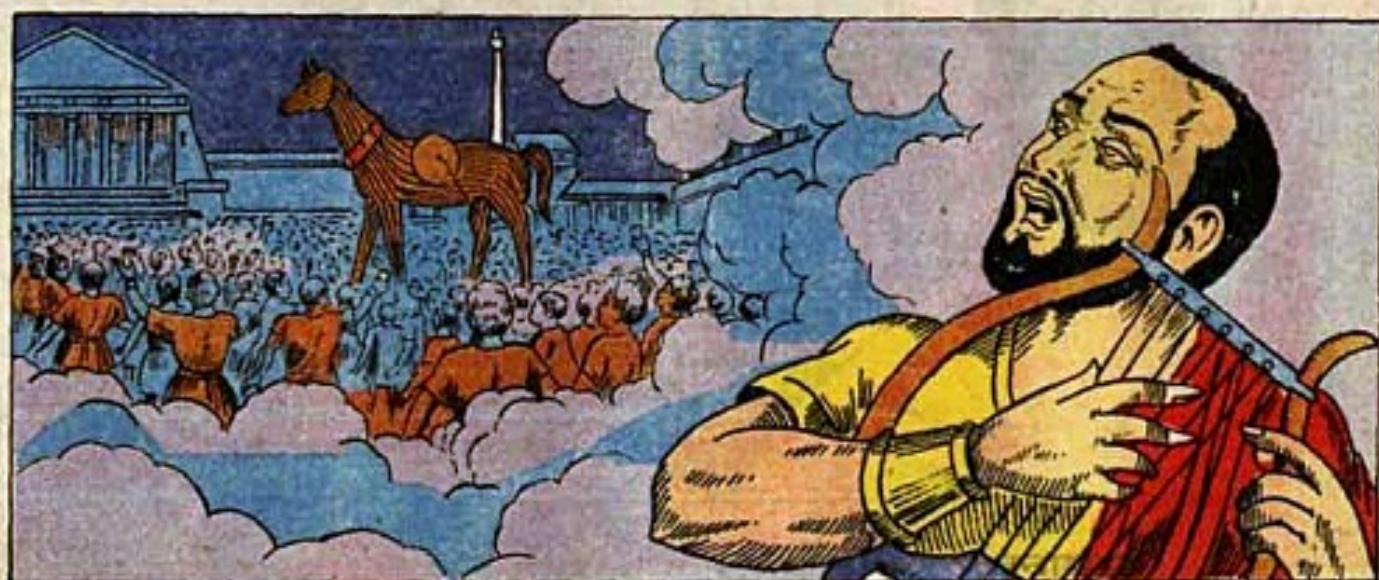
और सज़ा

हेलापुरी में अपराधियों के लिए नगर के बाहर एक जेल था। अपराधियों को वहाँ कड़ी से कड़ी सजाएँ दी जाती थीं। परंतु साथ ही फ़ुरसत के समय उनके मनोरंजन के कार्यक्रम भी होते रहते थे। राजा अरविंद सेन ने वहाँ उनके लिए एक पुस्तकालय का भी प्रबंध किया। अपराधी पुस्तकों को पढ़ते हुए तात्कालिक रूप से अपनी सज़ाएँ भूल जाते थे।

उसी नगर में वासुदेव नामक एक संपन्न व्यक्ति था। अचानक उसमें इच्छा जगी कि कविताएँ रचूँ और नाम कमाऊँ। उसने अपना नाम रख लिया कवि वासुदेव। इसी नाम से वह ग्रंथ रचने लगा। लेकिन जनता को उसकी रचनाएँ बिल्कुल ही पसंद नहीं आयीं। वे उन्हें बेकार कहने लगीं और कहने लगीं कि इन्हें पढ़ने से सिर में दर्द होता है। इस कारण वे सारे के सारे ग्रंथ वासुदेव के पास निरुपयोगी पड़े रहे।

इस स्थिति में वासुदेव सोचने लगा कि इन ग्रंथों का क्या किया जाए? उसने ग्रंथों का गट्ठर बंधवाया और जेल ले गया। उसने अधिकारी से प्रार्थना की कि वे भी पुस्तकालय में रखे जाएँ।

अधिकारी वासुदेव को जानता था। उसने सविनय कहा "कवि वासुदेवजी, राजा की आज्ञा के बिना अपराधियों को और सज़ा देने का मुझे कोई अधिकार नहीं। इसलिए मैं इन ग्रंथों को स्वीकार करने में असमर्थ हूँ।"

उसकी बातों से वासुदेव जान गया कि उसके ग्रंथों का मूल्य क्या है। वह घर लौटा और नगर भर में मुनादी पिटवायी कि आगे से उसका नाम कवि वासुदेव नहीं, बल्कि केवल वासुदेव है। - किरण

विरूप का साहस

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। शव को पेड़ से उतारा और अपने कंधों पर डाल लिया। यथावत् मौन श्मशान की तरफ़ बढ़ता जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, आधी रात का समय है। कुछ दीख नहीं रहा है। वातावरण भयानक है। ऐसी स्थिति में भी तुम कठोर परिश्रम कर रहे हो। तुम्हें देखते हुए मुझे संदेह हो रहा है कि तुम कहीं भाग्यहीन तो नहीं हो? क्योंकि ऐसे लोग चाहें, वे जितने भी साहसी क्यों ना हों, अपने प्रयत्नों में सफल नहीं हो पाते। सफलता उनके हाथों में आती ही नहीं। वे कुछ भी साध नहीं पाते। उन्हें अपनी मेहनत और साहस का जब फल मिलने का समय आसन्न होता है, तब वे विचित्र व कल्पनातीत निर्णय लेते हैं और सफलता को अपने ही हाथों खो देते हैं।

बैताल कथा

मैं उदाहरणार्थ विरूप की कहानी तुम्हें सुनाऊँगा, जिसने अपूर्व भाग्य अपने ही हाथों खो दिया। थकावट दूर करते जाओ और उसकी कहानी ध्यान से सुनो।'' फिर बेताल कहानी सुनाने लगा।

धीरसेन, पूर्णचंद्रपुर का राजा था। उसकी पुत्री का नाम था कांचन। वह अति सुंदरी थी। उससे जो विवाह करेगा, वही पूर्णचंद्रपुर का भावी राजा होगा। इस कारण बहुत-से राजकुमार उससे विवाह करने लालायित थे।

कांचन स्वभावतया साहसी थी, इसलिए उसकी इच्छा भी थी कि उसका होनेवाला पति बड़ा साहसी हो। उसने अपने पिता से कहा कि एक स्पर्धा का आयोजन किया जाए और इसमें जीतनेवाले से ही मेरा विवाह हो।

इस संबंध में उसके दिये हुए विवरण सुनकर धीरसेन सन्नाटे में आ गया। उसने अपनी पुत्री से कहा ''बेटी, ऐसी स्पर्धा का अर्थ यह हुआ कि इसमें भाग लेनेवाले वे अपनी जान से खेलें। मेरा विचार है कि अपनी जान पर खेलकर इस स्पर्धा में भाग लेने के लिए कोई आगे नहीं आयेगा। अच्छा यही होगा कि तुम कोई नयी स्पर्धा सुझाओ।''

कांचन ने हँसते हुए कहा ''मुझे जी जान से जो चाहेगा, उसके लिए तो अपने प्राण तिनके के समान होना चाहिये। है ना पिताश्री?''

धीरसेन पुत्री के हठी स्वभाव से परिचित था, इसलिए उसने 'हाँ' कह दिया। किन्तु उसे संदेह हुआ कि स्पर्धा के विवरण पहले ही घोषित किये जाएँ तो कोई भी शायद ना आये। इसलिए उसने तत्संबंधी विवरणों को घोषित नहीं किया। केवल इतना ही घोषित किया कि अगले पंचमी के दिन होनेवाली अत्यंत साहसपूर्ण स्पर्धा में जो विजेता होगा, उससे मेरी पुत्री कांचन विवाह करेगी और वही पूर्णचंद्रपुर का राजा भी होगा।

श्रीरंगपुर नामक गाँव पूर्णचंद्रपुर के पास ही था। वहाँ विरूप नामक एक युवक था।

जन्म से ही उसके दोनों हाथ नहीं थे। उसके बचपन में ही उसकी माँ मर चुकी थी। पिता ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली माँ की जब से संतान हुई तब से उसने विरूप को सताना शुरु किया। वह ताने देती थी "तुम तो किसी भी काम को करने के लायक नहीं हो। तुम्हारा जीना बेकार है। भूदेवी के लिए तुम भार हो।"

विरूप का पिता अपने पुत्र की दुस्थिति पर बहुत ही दुखी होता था। किन्तु, पत्नी के कड़ुवे स्वभाव से परिचित वह चुप रह जाता था। उसे उसके विरुद्ध कुछ बोलने का साहस नहीं होता था।

ऐसी परिस्थिति में विरूप ने कांचन के स्वयंवर का समाचार सुना। उसमें राजकुमारी के स्वयंवर को देखने का कुतूहल जगा। अलावा इसके, घोषित स्पर्धा देखने की भी उसकी इच्छा हुई। इसलिए वह पंचमी के दिन सबेरे ही पूर्णचंद्रपुर जाने निकल पड़ा।

कितने ही राजकुमार और कुछ साहसी युवक भी स्वयंवर में भाग लेने और राजकुमारी से विवाह रचाने बड़े ही उत्साह से राजधानी पहुँचे।

स्वयंवर के मंच पर राजा धीरसेन, कांचन, मंत्री कुसुम शर्मा आसीन थे। स्वयंवर के मुहूर्त के समय मंत्री अपने आसन से उठा और कहने लगा "आप जानते हैं कि स्पर्धा होनेवाली है, पर आप इस क्षण तक यह नहीं जानते कि यह कैसी स्पर्धा है। अब उस स्पर्धा के विवरण मुझसे सुनिये। स्पर्धा में जो भाग लेना चाहते हैं, उन्हें क़िले की दक्षिणी दिशा के बुर्ज़ के बीच में सिलसिलेवार रखी गयी तलवारों के बलय के बीच कूदना होगा। तलवारों के बीच की खाली जगह चार गजों से अधिक नहीं होगी। आप जानते ही हैं कि यह प्राण से खिलवाड़ है। मौत को आह्वान देना है। फिर भी राजकुमारी से विवाह करना हो तो इतना ख़तरा तो मोल लेना ही पडेगा। कांचन को अपने प्राणों से भी ज़्यादा चाहनेवाले वीरगण, आगे बढ़ें और
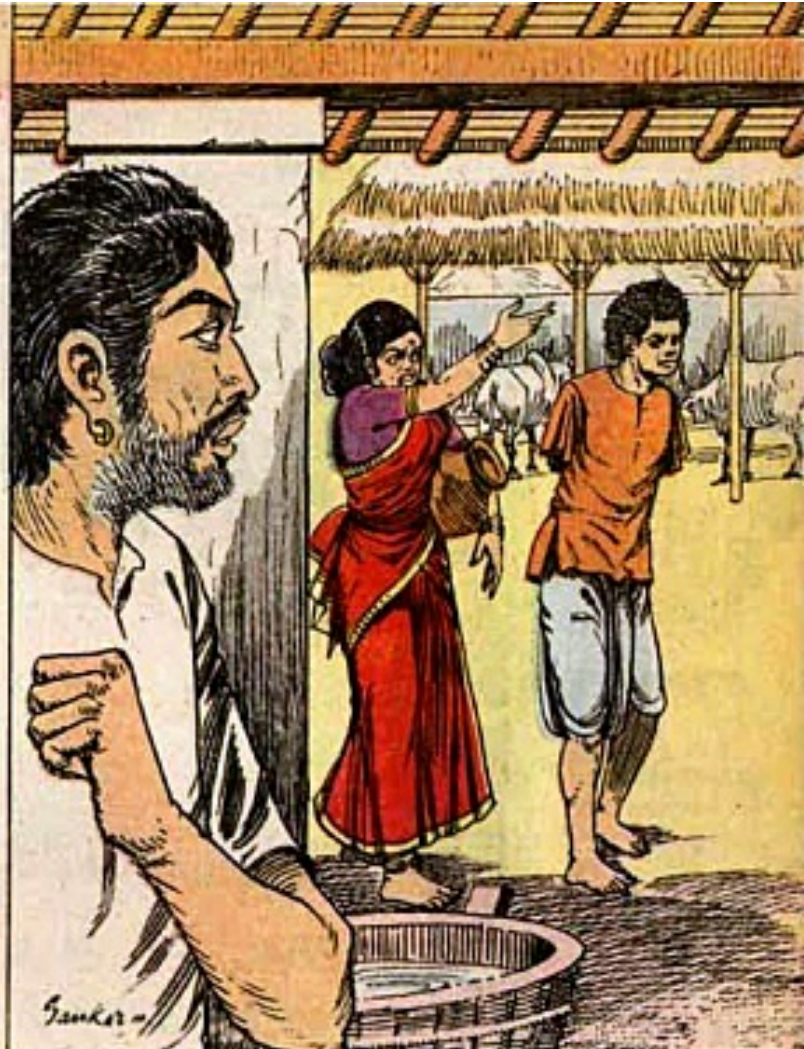
स्पर्धा में भाग लेकर अपनी वीरता की परीक्षा दें।" मंत्री के स्वर में गंभीरता थी।

मंत्री ने जैसे ही अपनी घोषणा समाप्त की, सभास्थल में चुप्पी छा गयी। फिर थोड़ी देर बाद उपस्थित लोग आपस में कानाफूसी करने लगे। एक राजकुमार दूसरे राजकुमार से कहने लगा "यह भी कोई स्पर्धा हुई! क़िले के बुर्ज़ से तलवारों के वलय के बीच कूदना आत्महत्या का प्रयत्न नही तो और क्या है। अगर वीरों की परीक्षा ही करनी थी तो खड़ग-युद्ध अथवा मल्ल-युद्ध जैसी स्पर्धाओं का प्रबंध किया जाता। कहीं यह राजा देश के राजकुमारों को एकसाथ मारने का षड्यंत्र तो नहीं रच रहा है? क्या देश में राजकुमारियों का अकाल पड़ गया? ऐसी ख़तरनाक स्पर्धाओं में भाग लेकर मौत को बुलावा देना निरी मूर्खता है।"

विरूप यहाँ आया था कुतूहलवश। वह तो सिर्फ़ स्पर्धाएँ देखकर आनंद लूटना चाहता था। लेकिन अब उसके विचारों में परिवर्तन आ गया। उसने मन ही मन दृढ़ निश्चय कर लिया और खड़े होकर बोला "महाराज, मैं स्पर्धा में भाग लेने सन्नद्ध हूँ।"

राजा धीरसेन ने विकलांग विरूप को नख से शिख तक ग़ौर से देखा और सन्नाटे में आ गया। वह सोचने लगा कि यह विकलांग अगर अपने प्रयत्न में सफल हो जाए तो मेरी बेटी का भविष्य कितना दुखद होगा। वह एक-दो क्षणों तक मौन रहा और लंबी सांस खींचते हुए कहा "ठीक है, जैसा तुम चाहते हो, करो।"

इतने राजकुमारों के होते हुए भी, विकलांग विरूप मात्र को स्पर्धा में भाग लेने तैयार देखकर राजकुमारी सन्न रह गयी। ऐसे स्वयंवर की उसने कल्पना तक न की थी। किन्तु स्वयंवर के नियमों के अनुसार उसे विजेता से विवाह करना ही होगा। पर यह सोचकर वह शांत हो गयी कि यह काम तो विकलांग से हो ही नहीं सकता। असंभव को संभव बनाने की शक्ति इसमें है ही नहीं।

एक विकलांग साधारण व्यक्ति के स्पर्धा

में भाग लेने के निर्णय ने राजकुमारों को भी आश्चर्य में डुबो दिया। उन्होंने इसे अपना अपमान भी माना। उनमें से एक ने ज़ोर से चिल्लाया "अरे पगले, पता नहीं, तुम किस माँ-बाप के अभागे पुत्र हो। आगे-पीछे सोचे बिना तुमने ऐसा निर्णय क्यों लिया? अपनी मौत को स्वयं क्यों बुला रहे हो? तुम तो किसी भी खेल को खेलने के लायक़ नहीं हो। क़िले के बुर्ज से तलवारों के वलय के बीच कूदना दुस्साध्य कार्य है। यह तो जान-बूझकर मौत को आह्वान देना है।" यों उसने विरूप को चेतावनी भी दी।

विरूप ने उसकी बातें स्पष्ट सुनीं। किंतु उसने उस चेतावनी की कोई परवाह नहीं की। अब उसकी मनोस्थिति भी इन बातों पर ध्यान देने की स्थिति में नहीं थी। वह धीरे-धीरे क़िले की दक्षिणी दिशा की ओर गया। वहाँ दीवार से सटी सीढ़ी को नित्सहाय देखता रहा।

मंत्री ने उसकी इस नित्सहायता को ताड़ा और तुरंत वहाँ दो सैनिकों को भेजा। उन्होंने विरूप को पकड़कर सावधानी से सीढ़ी पर से होते हुए क़िले के बुर्ज़ पर पहुँचाया। वहाँ से उसने देखा तो उसे लगा कि नीचे की तलवारों का वलय वधालय है। पाँवों में थोड़ा-सा कंपन हुआ। भय से सारा शरीर पसीने से भीग गया। दिल की धड़कन तेज़ हुई। लगा कि स्पर्धा से हट जाऊँ और जान बचा लूँ। पर, उसने
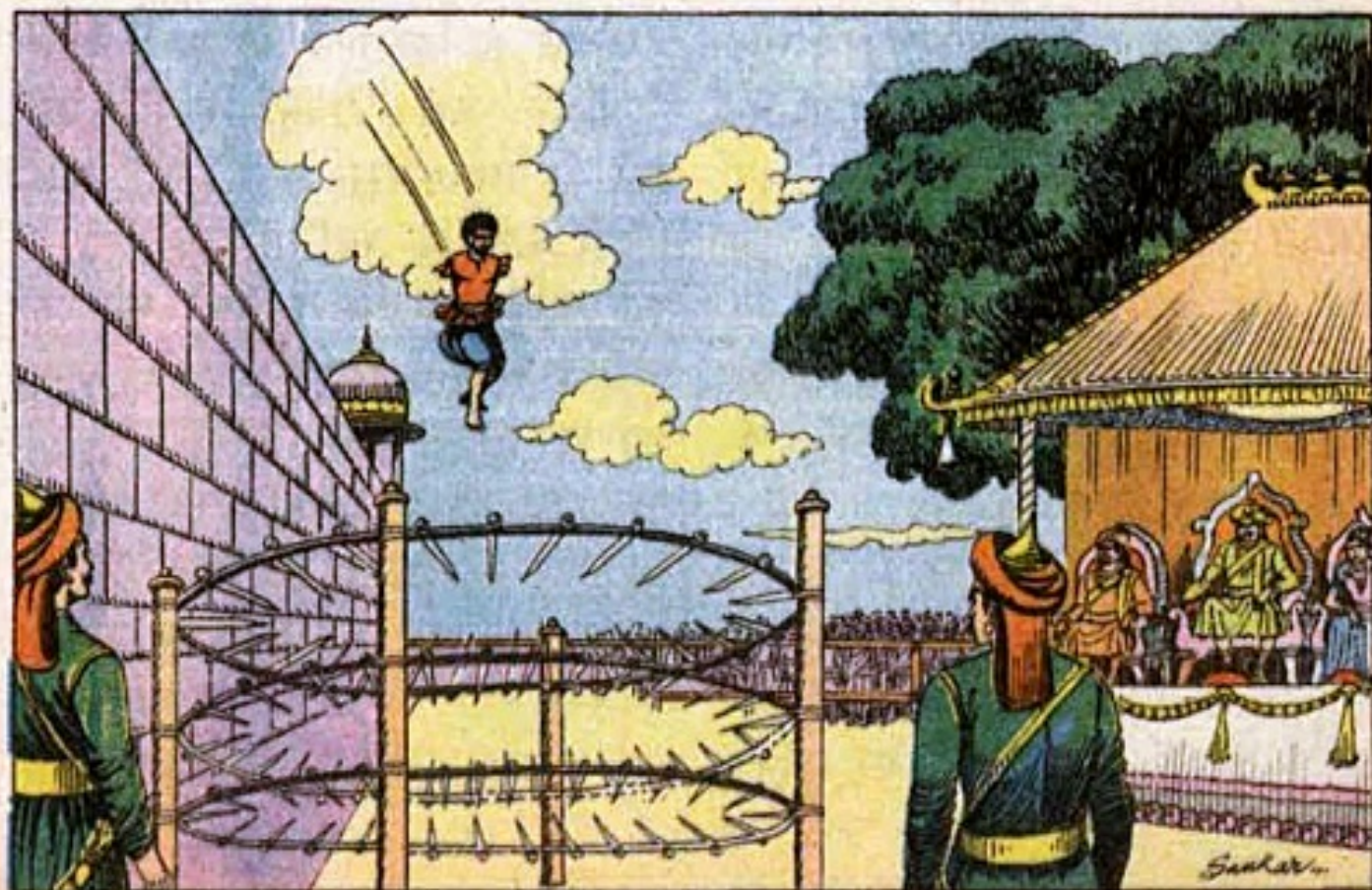
अपने को संभाला । अपनी इस क्षणिक बलहीनता पर लज्जित हुआ ।

विरूप ने देखा कि सभा-स्थल से लोग उसी की ओर एकटक देख रहे हैं । क्षण भर उसने अपने इष्टदेव का स्मरण किया और बुर्ज़ से तलवारों के वलय के बीच कूद पड़ा । यह दृश्य देखकर वहाँ उपस्थित सब अवाक् रह गये । दूसरे ही क्षण तालियाँ गूँज उठीं । भाग्यवश विरूप ठीक तलवारों के वलय के बीच खाली जगह पर आ गिरा ।

राजकुमारी कांचन चकित रह गयी । उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि विरूप जैसा विकलांग विजेता होकर उसका पति होगा । उसकी आशा थी कि कोई साहसी सुंदर राजकुमार विजेता होगा और उसका पति होगा । स्वयंवर में विजेता से विवाह करना तो क्षत्रिय रीति है । उसका अतिक्रमण क्षत्रिय-धर्म नहीं होता ।

इधर कांचन मन ही मन क्षुब्ध हो रही थी तो उधर उसका पिता धीरसेन अपनी बेटी के भविष्य पर दुखी होने लगा ।

विरूप ने उन दोनों की मनोस्थिति को भाँपा । वह मंच के सामने आया और राजा को प्रणाम करता हुआ बोला "महाराज, मुझे क्षमा कीजिये । मैं राजकुमारी से विवाह नहीं करूँगा । स्पर्धा में भाग लेने का मेरा उद्देश्य आपकी बेटी से विवाह करने का है ही नहीं । इस स्पर्धा में जीतकर मैंने एक अमूल्य भेंट प्राप्त की ।" कहता हुआ वह वहाँ से चला गया ।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा "राजन्, विरूप ने एक पगले की तरह व्यवहार किया । मेरी समझ में नहीं आता कि जब उसे राजकुमारी से शादी नहीं करनी थी तो उसने क्यों इस ख़तरनाक स्पर्धा में भाग लिया ? उल्टे उसने कहा कि इस स्पर्धा में जीतकर मैंने एक अमूल्य भेंट प्राप्त की । यह तो मेरी दृष्टि में एक पागल की बकबक है । अगर ऐसा न होता तो क्या हाथ आये ऐसे सुवर्ण अवसर को अपने हाथ से जाने देता? कांचन से शादी करता और पूर्णचंद्रपुर का राजा

बनता। यह तो उसकी भाग्यहीनता ही हुई ना? जानते हुए भी मेरे इन संदेहों के समाधान नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा ''विकलांग विरूप जन्म से ही अभागा है। बचपन में ही वह अपनी माता को खो चुका। सौतेली माँ उसे कोसती रही। उसे बेकार, निकम्मा, निहथ्था कहती रही। तरह-तरह से उसका अपमान करती रही। ऐसा व्यक्ति एक ऐसे मौक़े की ताक़ में रहता है, जब कि वह यह साबित कर सके कि मैं भी कुछ हूँ, मुझमें भी योग्यता और शक्ति है। अलावा इसके, उसमें लोगों की प्रशंसा पाने की भी तीव्र इच्छा होती है। उसके हृदय में आग सुलगती रहती है। राजकुमारी के स्वयंवर ने विरूप के जीवन में ऐसा अवसर ला खड़ा कर दिया, जिसकी उसने कल्पना ही नहीं की। उसकी इच्छा तो राजकुमारी से शादी करने की थी ही नहीं। उसे मालूम था कि वह इस योग्य नहीं है। उसने जान भी लिया कि शासन संभालना कोई आसान काम नहीं है। निरी निर्भीकता से, स्पर्धा में विजेता होने मात्र से इसका यह मतलब नहीं कि वह शासन-भार को संभालने के योग्य है। वह जानता था कि तलवार पकड़ने के लिए भी जिसका हाथ नहीं, वह भला युद्ध क्या कर सकेगा? विरूप को ये कठोर सत्य मालूम थे, इसीलिए उसने राजकुमारी से ब्याह रचाने से इनकार कर दिया। इसमें तो मुझे उसकी कोई भाग्यहीनता नहीं दीख रही है। लोगों में प्रमुख व्यक्ति माना जाऊँ, इसी उद्देश्य से उसने स्पर्धा में भाग लिया। अब रही, उसे प्राप्त अमूल्य भेंट। वह थी, लोगों में उसके साहस की चर्चा। उसे जब लगा कि मैं इसे साधने में सफल हुआ, तो राजकुमारी से विवाह न करने का अपना निश्चय सुनाकर वह वहाँ से चला गया। विरूप को उन्मादी या पगला समझ बैठना किसी भी दृष्टि से अनुचित है।''

राजा का मौन भंग होते ही, बेताल शव सहित ग़ायब हो गया।

(आधार - प्रफुल्ल चौधरी की रचना)

पारस्परिक विश्वास

गंगाराम, दामोदर का विश्वासपात्र नौकर था। पर, दस सालों के बाद भी उसके वेतन में जब बढ़ौती नहीं हुई तब उसने नौकरी छोड़ दी और कमल के पास नौकरी करने लगा। कमल उसे दामोदर से दुगुना वेतन देने लगा।

दामोदर ने सीताराम नामक एक व्यक्ति को नौकर के काम पर ले लिया और उससे कहा "देखो, गंगाराम ने मेरे पास पूरे दस साल काम किया। फिर भी उसमें विश्वास नहीं रहा। नौकर का मुख्य गुण होना चाहिए विश्वास। इस सत्य को सदा याद रखो।"

सीताराम एक दिन गंगाराम से मिला और उससे पूछा "तुमने दामोदर के पास दस साल नौकरी की। कोई गुर हो तो मुझे भी बताओ कि उसके साथ कैसे पेश आना है?"

गंगाराम ने कहा "गुर जानने की क्या ज़रूरत? वह तो अच्छा आदमी है। वहाँ तुम्हें कोई तक़लीफ़ नहीं होगी।" "अगर वह अच्छा आदमी है तो तुमने उसकी नौकरी क्यों छोड़ दी? तुम्हें तो उसपर विश्वास ही नहीं रहा। अधिक धन की आशा में नौकरी छोड़कर तुमने तो हम नौकरों को बदनाम कर दिया, इस पेशे को कलंकित कर दिया।" गंगाराम ने कह दिया।

"ऐसी कोई बात नहीं। दामोदर आदमी अच्छा है, पर उसमें विश्वास की भावना है ही नहीं। मालिक का मुख्य गुण है, विश्वास। विश्वासरहित मालिक के पास कोई कब तक नौकरी करेगा!" गंगाराम ने कहा।

- चंद्रमुखी

समुद्रतट की सैर – ५
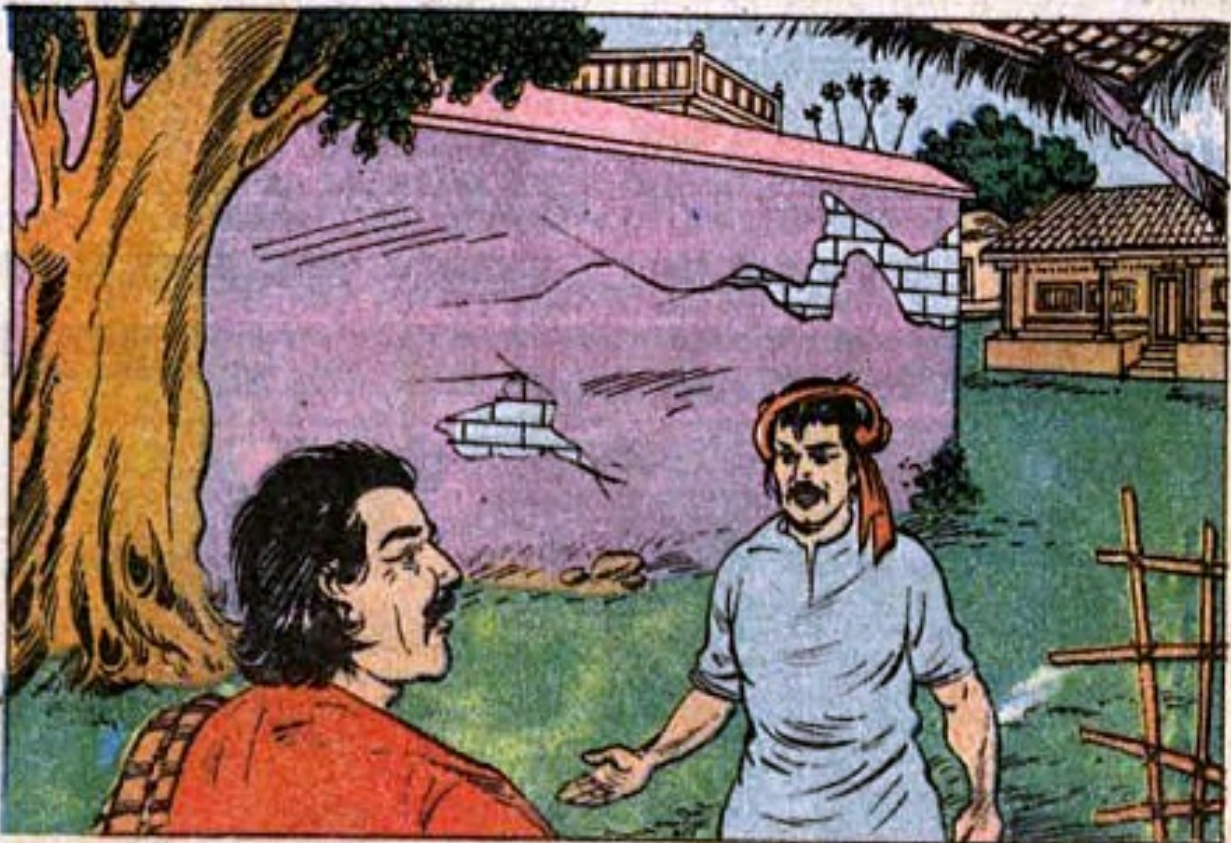
बंबई के दक्षिण में

आलेख : मीरा नायर
चित्र : गौतम सेन

पहली रेल यात्रा

हमारे देश में रेलयुग बंबई से ही शुरू हुआ था. १६ अप्रैल १८५३ को शाम को साढ़े तीन बजे देश की सबसे पहली ट्रेन बंबई के बोरीबंदर स्टेशन से रवाना हुई. उसमें ४०० यात्री थे. गंतव्य था ३४ किलोमीटर दूर थाना (ठाणे) स्टेशन. उस 'आधुनिक' करिश्मे को देखने हजारों लोग पटरी के दोनों ओर जमा हुए थे. ट्रेन *द ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला रेलवे* नाम की एक निजी कंपनी ने चलायी थी.

तब बोरीबंदर स्टेशन लकड़ी की इमारत थी. आज का शानदार स्टेशन, जिसे अभी हाल तक विक्टोरिया टर्मिनस कहते थे और अब *छत्रपति शिवाजी टर्मिनस* कहते हैं, बाद में बनवाया गया. स्टेशन जिस जगह बना वहां **मुंबादेवी** का मंदिर था. रेलवे स्टेशन बनाने के लिए तीन किलोमीटर दूर नयी जगह मंदिर का नवनिर्माण किया गया.

बंबई के दक्षिणी छोर पर, मोटर-लांच से एक छोटी-सी यात्रा करके हम **एलिफ़ैंटा** टापू पर पहुंचते हैं. रास्ते में विचित्र नामवाला एक नन्हा टापू पड़ता है – **बुचर आइलैंड**, यानी कसाई द्वीप ! किसी जमाने में राबिन नाम का एक कसाई वहां रहता था और बंबई के अंग्रेज समाज के भोजन के लिए सब तरह के पशु वहां पालता था. उसी के नाम पर टापू बुचर आइलैंड कहलाया. आजकल वहां विदेशों से कच्चा तेल लेकर आनेवाले जहाज ठहरते हैं.

विक्टोरिया टर्मिनस

यह मत समझ लेना कि एलिफ़ैंटा द्वीप पर हाथी बसते हैं. वहां तो बड़ी संख्या में बंदरों का वास है ! १६ वीं शताब्दी में जब पुर्तगाली लोग पहली बार इस द्वीप पर पहुंचे तो उन्हें समुद्रतट पर पत्थर की बनी हाथी की विशाल मूर्ति मिली. बस, उन्होंने उस द्वीप को 'एलिफ़ैंटा' नाम दे डाला. बाद में अंग्रेजों ने हाथी की उस मूर्ति को शहर के चिड़ियाघर **विक्टोरिया गार्डन** (रानीबाग) में पहुंचा दिया. हाथी आज भी वहां खड़ा है, लेकिन विक्टोरिया गार्डन का अब *वीरमाता जीजाबाई भोंसले उद्यान* हो गया है.

एलिफ़ैंटा द्वीप अपने गुफा-मंदिरों के कारण प्रसिद्ध है. सभी गुफाएं चट्टान को काट कर बनायी गयी हैं. उनमें से सबसे बड़ी और आकर्षक है – मुख्य गुफा. इस गुफा में जानी-मानी त्रिमूर्ति है जो भगवान शिव के सृष्टिकर्ता, संरक्षक और संहारक यानी संसार को बनाने, चलाने और मिटानेवाले के रूप में दिखाती है.

मंदिर की एक खंडित मूर्ति

एलिफ़ैंटा की विशाल त्रिमूर्ति, जो भगवान शिव के तीन रूप दरसाती है.

गुफा की दीवारों पर पुराणों के रोचक प्रसंग खोदे गये हैं. इनमें सबसे दिलचस्प है रावण के मानमर्दन की कहानी. मद में चूर रावण कैलास पर्वत को हिला देने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक किये दे रहा है, लेकिन भगवान शिव को उसकी तनिक भी परवाह नहीं. वे अपनी पत्नी पार्वती के साथ चौपड़ खेलने में मस्त हैं. बस, पैर का अंगूठा नीचे दबा कर उन्होंने पूरा पर्वत थाम रखा है. शिव-पार्वती के विवाह और गंगावतरण की कथा भी यहां सुंदर ढंग से उकेरी गयी है. सौभाग्य से उन्हें ज्यादा तोड़ा-फोड़ा नहीं गया है. भगवान शिव के अर्धनारीश्वर रूप की प्रतिमा भी अति सुंदर है.

गुफा के भीतर चट्टान को काट कर बनाया गया एक सुंदर खंभा

शिवरात्रि और अन्य शैव पर्वों पर एलिफ़ैंटा की गुफाओं में बड़ी चहल-पहल रहती है. दिन में मेला लगता है और रात को नाच, गाना-बजाना जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं.

मुख्य गुफा से जरा दूर ही दो गुफाएं और हैं, लेकिन उन्हें काफी तोड़ा-फोड़ा गया है. **सीताबाई का देवल** (मंदिर) कहलानेवाली एक अन्य गुफा भी है. इसके बाहर कभी एक सुंदर द्वार और संगमरमर का दालान था. इस गुफा की दशा अपेक्षाकृत अच्छी है.

एलिफ़ैंटा टापू के दक्षिण में पड़ता है **अलीबाग**, जो कि मुख्यभूमि पर है. कोंकण क्षेत्र का यह तटवर्ती शहर बंबई के सैलानियों को बहुत प्रिय है.

शिव-पार्वती-विवाह

कैलास पर्वत पर बैठे भगवान शिव

अलीबाग का समुद्रतट

अलीबाग शहर का नाम एक धनी मुसलमान व्यापारी के नाम पर रखा गया है. उसने सत्रहवीं शताब्दी में यहां कई कुएं खुदवाये और बाग-बगीचे लगवाये, जो आज भी मौजूद हैं. यहां के नारियल और कलमी आम कोंकण क्षेत्र में बहुत मशहूर हैं.

अलीबाग तालुके में ही चौल कस्बा भी है. वह चौदहवीं सदी तक बहुत महत्वपूर्ण और व्यस्त बंदरगाह था. उसका प्राचीन नाम **चंपावती** और **रेवतीक्षेत्र** था और उसका रोम के साथ व्यापार चलता था. जब सोलहवीं सदी ई. में पुर्तगाली आये, तब तक वह चौल कहा जाने लगा था. यहां का समुद्रतट जहाजों के आने और ठहरने के लिए बहुत अनुकूल है. इसीलिए यह महत्वपूर्ण व्यापारिक बंदरगाह बन गया.

चौल से कई किलोमीटर दक्षिण में एक चट्टानी द्वीप पर जंजीरा का सुदृढ़ किला बना हुआ है. किले की १५ मीटर ऊंची दीवारें ऐसी दिखती हैं जैसे पानी में से उग आयी हों ! वर्तमान किले का निर्माण १७०७ में मलिक अम्बर नाम के अबीसीनियाई सरदार ने करवाया था. अफ्रीकी देश अबीसीनिया अब इथियोपिया कहलाता है. आखिर इतने दूर देश का वह आदमी महाराष्ट्र के एक जलदुर्ग का मालिक कैसे बन बैठा ? इसके पीछे एक दिलचस्प कहानी है.

कहा जाता है कि १४८९ में अबीसीनिया का एक लुटेरा इस द्वीप पर पहुंचा और उसने यहां के शासक से अपने जहाज से ३० पेटियां तट पर उतारने की इजाजत मांगी. शासक ने उसे व्यापारी समझ कर इसकी अनुमति दे दी. देखते-ही-देखते ३०० पेटियों में से लड़ाके निकल पड़े और किले पर अबीसीनियाई सरदार का कब्जा हो गया. तब से १९४७ तक किला उसके वंशजों के अधीन रहा. वे खुद को सैयद कहते थे, जो कि आगे चल कर सिद्दी बन गया. 'जंजीरा' भी अरबी शब्द 'जज़ीरा' (द्वीप) का बिगड़ा रूप है.
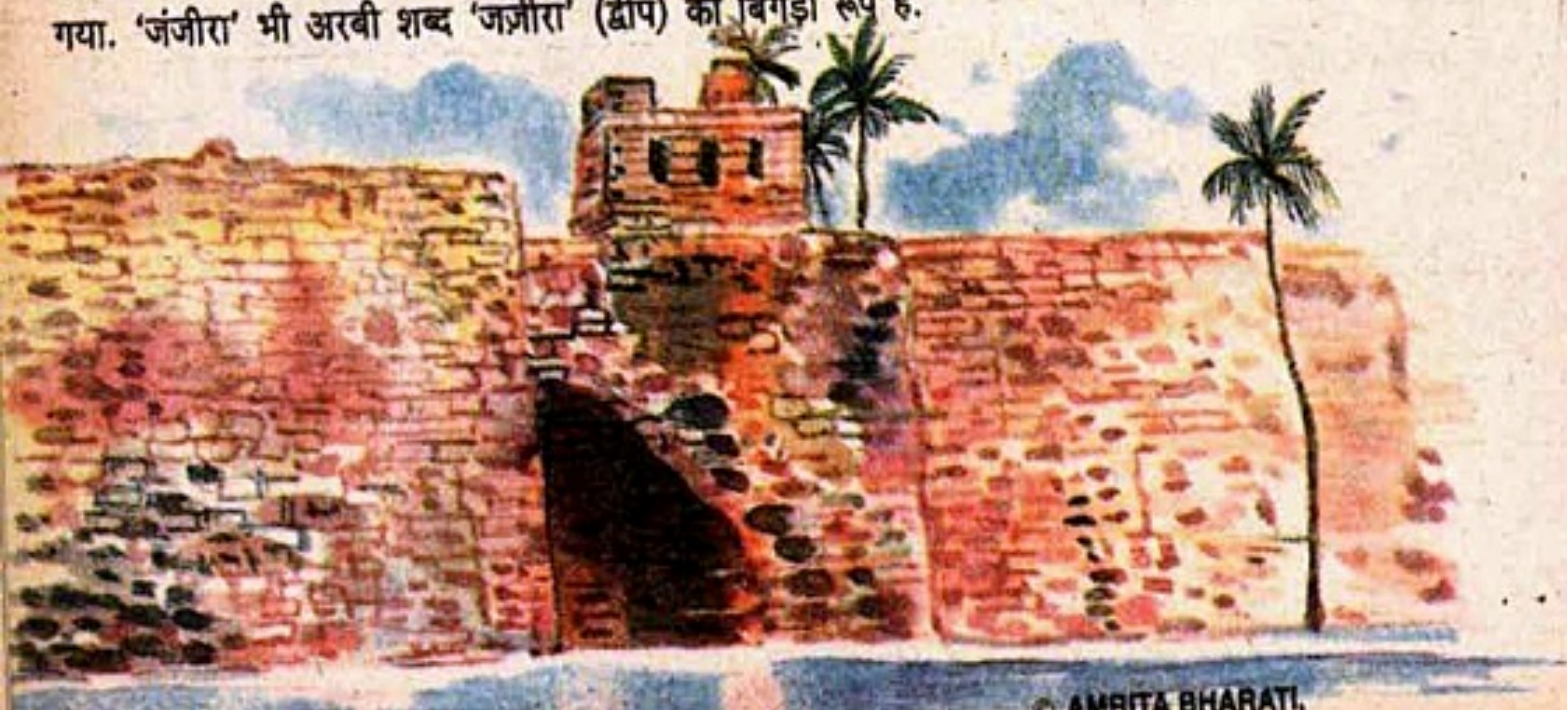
मायके की देवी

सोना पैदा हुई एक साधारण परिवार में। बचपन से ही वह गहनों पर मरती थी। जब जवान हुई, तब उसकी शादी बहादूर से हुई। वह ज़मींदार की कचहरी में नौकरी करता था।

जब से सोना ससुराल आयी तब से वह अपने पति से बार-बार पूछती रहती थी कि मुझे गहने चाहिये। आरंभ में वह मुस्कुराकर चुप रह जाता था। धीरे-धीरे जब उसकी माँग ज़िद में बदल गयी तो उसने सोचा कि अब चुप रहना श्रेयस्कर नहीं। उसने अपनी पत्नी से कहा "हमारे ओहदे के अनुसार जो गहने चाहिये, वे तो तुम्हारे पास हैं ही। सोने की चूडियाँ व चंद्रहार जैसे गहने बनवाने के लिए मैं कोई ज़मींदार नहीं हूँ। तेरा पति कचहरी में एक मामूली कर्मचारी है, इसे याद रखो और अपना पागलपन छोडो।" उसने गंभीर स्वर में कहा।

सोना कर भी क्या सकती थी। चुप रह गयी। किन्तु गहनों का मोह उससे नहीं छूटा।

यों समय बीतता गया। उनका बेटा हुआ। उसका नाम था गोविंद। वह बड़ा हुआ। उसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की। उसे भी कचहरी में अच्छी नौकरी मिली। उसे नौकरी क्या मिली, गोबिंद बीमार पड़ गया। उसकी तबीयत बिल्कुल ख़राब हो गयी। इसलिए उसे नौकरी छोड़नी पड़ी। वह घर पर रहने लगा।

बेटे गोविंद की नौकरी से सोना के मन में फिर से गहनों की चाह जगी। वह चाहने लगी कि जब बेटे की शादी हो जायेगी तो काफ़ी दहेज लूँगी और उस धन से तरह-तरह के गहने ख़रीदूँगी। उसकी यह इच्छा अत्यंत प्रबल होती गयी।

परन्तु सोना की आशाओं के विरुद्ध गोविंद
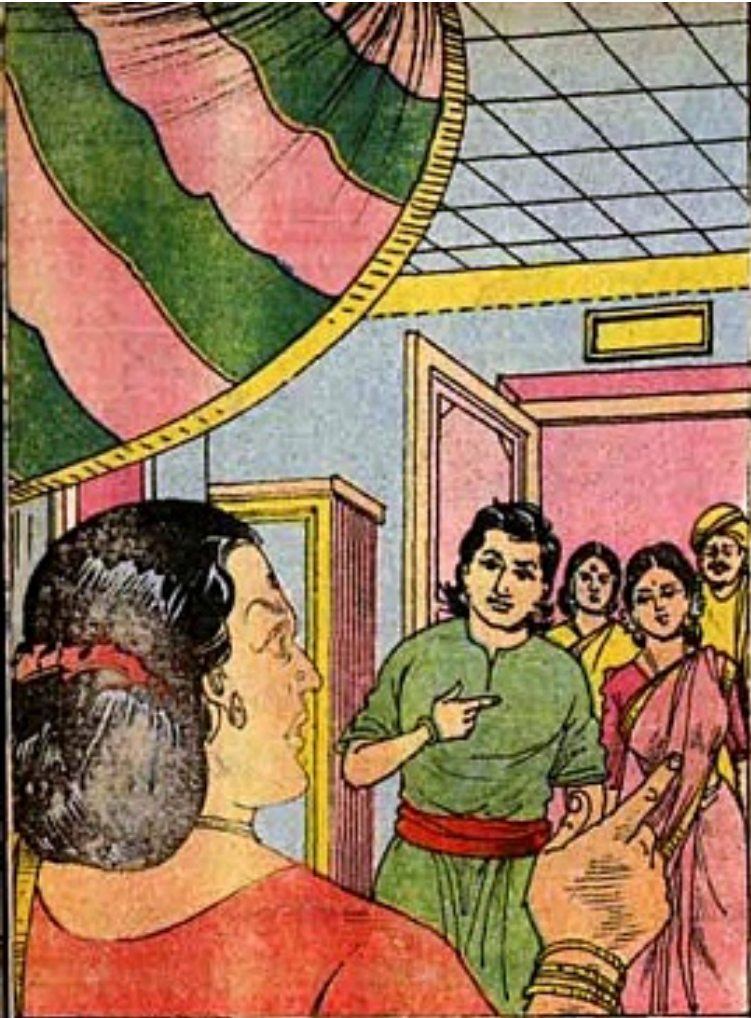
की शादी हो गयी। यह ऐसा हुआ। गोविंद अपने दोस्त की शादी पर दूर के एक गाँव गया था। उस शादी में कमला नामक एक लड़की ने उसे बहुत आकर्षित किया। जब उसे मालूम हुआ कि दो-तीन महीनों तक विवाह के योग्य शुभ तिथियाँ नहीं हैं तो उसने कमला के माँ-बाप की स्वीकृति लेकर उसी मुहूर्त पर उससे शादी कर ली। वह उसे अपने साथ घर ले आया।

बहू कमला को देखकर आश्चर्य में डूबी सोना से गोविंद ने कहा "माँ, यह तुम्हारी बहू है। हमें आशीर्वाद दो।" दोनों सोना के पाँव छूने झुके।

सोना ने नाराज़ होते हुए अपने पाँव पीछे हटा लिये। कहा "यह तुम्हारी पत्नी हो सकती है, लेकिन मेरी बहू नहीं।"

पास ही खड़े कमला के पिता ने कहा "नाराज़ मत होइये। मेरे बेटी दामाद को बहुत अच्छी लगी। हमने उनसे कहा भी था कि हम साधारण लोग हैं। दहेज देने की शक्ति नहीं रखते। फिर भी उन्होंने मेरी बेटी से शादी कर ली। कितने उदार हैं आपके बेटे।"

"अच्छा! मैं अब जान गयी कि यह रिश्ता कितना गया-गुज़रा है।" और नाराज़ होती हुई सोना ने कहा।

तब कमला की माँ ने दख़ल देते हुए कहा "हम मानते हैं कि आपके बिना विवाह कराना हमारी भूल है। दामादजी की जिद थी कि शादी उसी मुहूर्त पर हो, क्योंकि कोई अच्छा मुहूर्त निकट भविष्य में नहीं है। हमें माफ़ कीजिये समधिनजी।" कहते हुए उसने सोना के हाथ पकड़ लिये।

सोना ने अपने हाथों को छुड़ाते हुए कहा "रहने दो ये रिश्ते। बड़ी आयी, समधिन कहकर पुकारनेवाली। अपनी लड़की को यहाँ छोड़ो और तुरंत यहाँ से चली जाओ।" इन कड़वी बातों को सुनते हुए कमला के माँ-बाप की आँखों से आँसू बहने लगे। करुणा-भरी दृष्टि से अपनी पुत्री को एक बार देखकर वे वहाँ से चले गये।

इस समय सोना का पति घर पर नहीं था।

वहाँ से चार कोस की दूरी पर के गाँव में एक बैरागी आया हुआ था। बहादूर ने सुना था कि वह बैरागी असाधारण बीमारी की भी चिकित्सा कर सकता है। एक ही बार दी गयी उसकी दवा से बीमारी दूर हो जाती है। उसकी आशा थी कि शायद उस बैरागी की दवा से मैं भी ठीक हो जाऊँगा।

दूसरे दिन लौटे बहादूर ने सारी बातें बेटे गोविंद से सुनीं। उसने बेटे से उदास होकर कहा "मैं भाग्यहीन हूँ। वह बैरागी पिछले दिन ही गाँव छोड़कर कहीं चला गया। तुम तो अपनी माँ का स्वभाव जानते हो। उससे बताये बिना तुम्हें यह शादी नहीं करनी थी।"

हफ़्ता भी नही हुआ, सोना ने बहू कमला पर ताने कसने शुरु कर दिये। घर की नौकरानी को निकाल दिया। रसोई से लेकर कपड़ों की धुलाई तक उसी से कराने लगी।

इतने से वह खुश नहीं हुई। उसने एक दिन कमला से कहा "एक पैसा भी दहेज दिये बिना महारानी की तरह राज करने यहाँ चली आयी हो। आज से तुम्हें एक ही वक़्त का खाना मिलेगा। वह भी रात के समय। तुमने यह बात अपने पति से अगर कही तो याद रखो, तुमपर चोरी का इल्ज़ाम लगाऊँगी और हमेशा के लिए तुम्हें मायके भेज दूँगी।" उसने बहू को धमकी दी।

एक ही वक़्त का खाना खाने की वजह से कमला कमज़ोर पड़ गयी और दुबली-पतली हो गयी। एक दिन रात को खाते समय गोविंद ने पूछा "कमला, क्यों इतनी कमज़ोर लग रही हो?"

उस समय पर वहाँ आयी सोना ने कहा "शायद माँ को देखने तरस गयी है। कल इसे ले जाओ और मायके में छोड़ आओ।"

गोविंद ने 'हाँ' कहा।

रात को कमला सो नहीं पायी। वह आधी रात को घर के पिछवाड़े में गयी और सिसक-सिसककर रोने लगी। सास के कड़ुवे रुख के बारे में जब सोचने लगी तो उसका दुख और बढ़ता गया। अकस्मात् बादाम पेड़ के पत्तों के हिलने से आवाज़ आयी तो उसने सिर उठाकर देखा। एक

अब वह तुम्हें भरपेट खिलाये बिना नहीं रह सकेगी।"

पिशाचिनी पेड़ की टहनियों से धडाम् से नीचे कूदी और उसके सामने खड़ी हो गयी। उसने कहा "डरो मत। मैं तुम्हारी भलाई करने ही आयी हूँ। बोलो, क्यों इतनी दुखी हो?"

उसकी बातों से कमला ने हिम्मत बांधी। उसने सास की करतूतों को सविस्तार उसे सुनाया। सब सुनने के बाद पिशाचिनी ने कहा "ठीक है, आज से तुम जो अन्न खाओगी, उसके हज़ार अन्न-कणों में से, एक अन्न कण सोने का एक कण होगा। रात को खाकर जब तुम थाली पलटोगी, तब उस थाली के नीचे सोने के कण चिपके हुए होंगे। तुम्हारी सास सोने के पीछे पगली है।

दूसरे दिन कमला को मायका जाने निकलना था तो सबेरे-सबेरे उसने सास से कहा "रात को मैंने एक सपना देखा। सपने में मेरे मायके की देवी ने बताया कि मेरी थाली के नीचे सोने के कण चिपके पाओगी।" साथ ही उसने वे सारे विवरण बताये, जिन्हें पिशाचिनी ने उससे कहा था।

थोड़ी देर तक सोना के मुँह से बात ही नहीं निकली। उसने अपने को संभालने के बाद पूछा "सच?" फिर अचानक उसे संदेह हुआ। उसने कमला से पूछा "तुम जिस मायके की देवी की बात कर रही हो, वह आज तक कहाँ गुम हो गयी? बहू बनकर जिस दिन तुमने इस घर में क़दम रखा, उसी दिन बताती तो सोने का ढ़ेर लग जाता। मैं तरह-तरह के गहनें बना लेती। बेचारी तेरी देवी को हमारा घर ढूँढ़ने में तक़लीफ़ हुई होगी, इसीलिए इतनी देरी हो गयी। जो भी हो, आज तुम अपना मायका नहीं जाओगी।"

रात को जब सब सो गये तब सोना ने बहू की थाली को पलटकर देखा तो उसके नीचे सुवर्ण कण पाये। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। तब से वह बहू को तीनों वक़्त खाना देने लगी। महीने भर में प्राप्त उस सोने से उसने चूडियाँ बनवायीं। बहू कमला

से उसने बता दिया कि भूल जाओ कि तुम्हारा कोई मायका भी है। सोना की दुराशा दिन ब दिन बढ़ती गयी।

बहू कहती कि पेट भर गया है, फिर भी उसे और खाने के लिए मजबूर करती।

एक दिन रात को पेट के दर्द से दुखी हो कमला पिछवाड़े में बैठी रही। उसे अपने माँ-बाप को देखने की भी तीव्र इच्छा हो रही थी।

उस समय पिशाचिनी हठात् उसके सामने आ खड़ी हो गयी और पूछा "कहो, कौन-सी नयी आफ़त आ पड़ी?"

कमला ने जब अपनी इच्छा व्यक्त की तो उसने चुटकी बजाते हुए कहा "अब से तुम्हारे अन्न-कण सोने में परिवर्तित नहीं होंगे। अगर तुम्हारी सास एक वक़्त का खाना छोड़ देगी तो उसकी थाली के नीचे सोने की अशर्फ़ी होगी।" कहकर वह गायब हो गयी।

सबेरे उसने यह बात सास से बतायी। सास ने तब कहा "अब इस घर में तुम्हारी क्या ज़रूरत है। तुम आज ही अपने मायके चली जाओ।" और उसी दिन उसे भेज भी दिया।

सोना ने दुपहर को खाना नहीं खाया। उसने उपवास रखा। रात को देखा तो थाली के नीचे चमकती हुई सोने की अशर्फी पायी। दूसरे दिन उसने दोनों वक़्त नहीं खाया। दो अशर्फ़ियाँ मिलीं।

यह सब देखते हुए सोना के दिमाग़ में एक नया उपाय सूझा। उसने सोचा यह खाना

तो जब से पैदा हुई हूँ, खा रही हूँ, दस दिनों तक लगातार उपवास रखूँगी तो क्या हो जायेगा? इन दस दिनों में बीस अशर्फियाँ मिलेंगीं। उनसे सोने की जंजीर बनवाऊँगी। थोड़े ही दिनों में रिश्तेदार के यहाँ होनेवाली शादी पर जाऊँगी और वहाँ आयी औरतों को अपनी जंजीर दिखाकर बेहोश कर दूँगी।

ऐसा सोचकर उसने खाना ही छोड़ दिया। तीसरे दिन तक वह कमज़ोर पड़ गयी और इतनी भी शक्ति नहीं रही कि थाली के नीचे से अशर्फी ले। इस हालत में उसके दिमाग़ में एक नयी सूझ सूझी।

उसने अपने बेटे गोविंद को बुलाकर कहा "बेटे, तुम तुरंत जाओ। वैद्य गुरुपाँडे से पूछकर आना कि साबूदाने का या चावल का माँड पीना भी खाना खाने के समान है?" हाँफती हुई उसने कहा।

गोविंद की समझ में नहीं आया कि माँ को ऐसा विचित्र संदेह क्यों हुआ ? उसने वैद्य के पास जाकर माँ का संदेह दुहराया। वैद्य ने हँसते हुए कहा "पानी के सिवा, जो भी खाया जायेगा, भोजन ही माना जायेगा।"

गोविंद के घर लौटते-लौटते उसकी माँ बेहोश हो चुकी थी। उसने वैद्य को बुलवाया और माँ को पिता के सुपुर्द करके ससुराल चला गया और कमला को अपने साथ ले आया।

सोना को देखते ही कमला ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी और कहने लगी "क्या हुआ सासजी? क्या हुआ?" सोना ने, कमला को प्यार से अपने पास बुलाकर बिठाया और जो हुआ, सब बताया। उसने कहा "तुम जैसी अच्छी बहू के घर में होते हुए भी गहनों के पीछे पगली होकर अपना यह हाल कर लिया। मैं भी कितनी बेवकूफ़ हूँ। इस उम्र में मुझे गहनों की क्या ज़रूरत? यह सोना तुम ले लो और गहने बना लो। यह बात अपने ससुर से कभी मत कहो।"

कमला ने अपनी सास की भरसक सेवा-शुश्रूषा की। तब जाकर वह एक महीने के अंदर तंदुरुस्त हो गयी।

फरक़

एक राजा था, जो अपना राजधर्म बड़ी ही श्रद्धा से निभाता था। उस राजा की कीर्ति देश की चारों दिशाओं में व्याप्त हुई।

एक दिन वह राजा आखेट करने जंगल गया। आखेट की मस्ती में अपने राजपरिवार को छोड़कर बहुत दूर अकेले ही चला गया। घने जंगल में वह फँस गया और रास्ता भूल गया। भूख और प्यास से तड़पता हुआ वह आख़िर एक मुनि के आश्रम के पास आया।

उस समय मुनि आँखें मूँदकर तपस्या में लीन था। राजा ने उसे प्रणाम करते हुए बताया "महात्मा, जंगल में फँस गया। रास्ता भी भूल गया। भूख-प्यास के मारे बहुत ही थका हुआ हूँ। क्या आपके आश्रम में थोड़ी देर तक विश्राम कर सकता हूँ?" बिना आँखें खोले ही मुनि ने कहा "विश्राम कर सकते हो। इस देश का शासक धर्मप्रभु है। इसलिए भूख-प्यास से डरने की कोई आवश्यकता नहीं। आश्रम का कोई भी फल या पत्ता खाओ, मीठा ही होगा, रुचिकर ही होगा। इन्हें खाने से बल भी मिलेगा। उन्हें खाकर अपनी भूख मिटा लो।"

मुनि की बातों से राजा को आश्चर्य हुआ। उसने एक पेड़ के फल को तोड़ा और मुँह में डाल लिया। मीठा था, रुचिकर भी। जिस पेड़ के फलों को खट्टा और कड़ुवा होना था, वे भी मीठे थे। उन्हें खाने पर राजा की भूख क्षण भर में मिट गयी। शरीर के साथ-साथ मन भी संतुष्ट हुआ। राजा ने थोड़ी देर तक वहाँ विश्राम लिया और फिर अपने राज्य की ओर निकल पड़ा।

घर लौटने के बाद राजा ने सोचा कि अपने धर्मशासन की महत्ता सबकी दृष्टि में लाने से अच्छा होगा। उसने तुरंत अपने मंत्रियों, सामंतों तथा नगर के प्रमुखों को

दावत पर बुलाया। अपने रसोइयों को आज्ञा दी कि नीम तथा करेलों को निचोड़कर खीर बनायी जाए।

रसोइयों ने भी ऐसा ही किया, जैसा राजा चाहता था। उन्होंने सोचा कि राजा की ऐसी आज्ञा का अवश्य ही कोई उद्देश्य होगा। इसके पीछे कोई रहस्य होगा।

सब के साथ राजा भी भोजन करने बैठा। पर उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। उसे निराश होना पड़ा। खीर मुँह में रखने पर क़ै आ गयी।

राजा ने दावत बंद करा दी। फिर से खाना बनाया गया और सभी को खिलाया गया। और यों अपने को जगहँसाई से बचा लिया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्यों उस दिन उसने मुनि के आश्रम में जो भी खाया, मीठा था, रुचिकर था। उसने सोचा कि रसोइये के कारण रसोई शायद बिगड़ी होगी। मैंने जैसा चाहा, वैसा बनाया नहीं होगा। उसने खुद अकेले नीम व करेला खाया। वे कड़वे ही थे। इसका यह मतलब हुआ कि इसमें रसोइयों की कोई ग़लती नहीं है।

इस भेद को जानने के लिए वह तुरंत मुनि से मिलने निकल पड़ा। मुनि से पूछकर वह इसका कारण जानना चाहता था। मुनि से उसने अपना संदेह व्यक्त किया और पूछा "उस दिन तो जो भी खाया, मीठा था, रुचिकर था। पर आज ऐसा क्यों हुआ?"

"उस दिन मुझे मालूम नहीं था कि तुम ही राजा हो। अनजाने में मैंने तुम्हारी धर्म-प्रवृत्ति की सराहना की। इस कारण से तुममें घमंड भर गया। अपनी महिमा की परीक्षा तुमने स्वयं कर ली। महिमाएँ धर्म-संगत हो सकती हैं किन्तु वे परीक्षा की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं।" मुनि ने कारण बताया।

राजा ने मुनि से क्षमा माँगी और राजधानी लौट पड़ा। इस घटना के बाद राजा का घमंड दूर हो गया और विनयपूर्वक रहने लगा।

महाभारत

आधी रात हो गयी। जरासंध को अतिथियों को दिया गया अपना वचन याद था। वह यज्ञशाला में आया और कृष्ण-अर्जुन से कहा "महोदय, आप स्नातक हैं। स्नातक फूल-मालाएँ नहीं पहनते। चंदन नहीं पोतते। आपने तो ये दोनों काम किये। आपकी भुजाओं पर धनुष के चिह्न हैं। आपका प्रवेश नगर के मुखद्वार से नहीं हुआ। प्राकार को फाँदकर आये। ब्राह्मणों के वेष में आये आप क्षत्रिय लग रहे हैं। सच बताइये कि आप कौन हैं? किस काम पर यहाँ पधारे?"

कृष्ण ने कहा "ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य स्नातक हो सकते हैं। हम क्षत्रिय स्नातक हैं। अपनी महिमा के कारण ब्राह्मण की तरह दीख रहे हैं। बड़ों का कहना है कि मित्र के घर में द्वार से प्रवेश करो और शत्रु के घर में ऐसे स्थल से प्रवेश करो, जहाँ द्वार न हो। तुम हमारे शत्रु हो, इसलिए हम प्राकार फाँदकर आये। तुमसे हमारा नहीं बनता, इसलिए हमने तुम्हारी पूजाओं का तिरस्कार किया। अपना शौर्य-पराक्रम दिखाने तुम्हारे यहाँ आये हैं।"

जरासंध ने कृष्ण से कहा "कितना भी सोचूँ, पर मुझे नहीं सूझता कि आपसे क्रोधित क्यों होऊँ? आपसे द्वेष क्यों करूँ? बताइये कि मैं आपका शत्रु कैसे हुआ? निरपराधी को शत्रु मानना तो धर्म के विरुद्ध है।"

कृष्ण ने उत्तर में कहा "एक महान व्यक्ति ने अपना कुलधर्म निभाने के उद्देश्य से तुमसे युद्ध करने के लिए हमें भेजा है। अकारण ही तुमने कितने ही राजाओं को बंदी बना रखा है। हर दिन एक-एक की बलि भैरवी को चढ़ा रहे हो। इस स्थिति में अपने को निरपराधी कहने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं। इससे बढ़कर अधर्म और क्या हो सकता है? तुम्हें मारकर, तुमसे पीडित लोगों को छुड़ाने के लिए हम यहाँ आये हैं। तुम जैसे घमंडी कार्तवीर्य की ऐसी ही दुस्थिति हुई। जिन्हें तुमने क़ैद कर रखा है, उन्हें छोड़ दो अथवा हमसे लड़कर मर जाओ। मैं कृष्ण हूँ। ये दोनों भीम और अर्जुन हैं।"

उसकी बातें सुनकर जरासंध क्रोधित हो उठा। उसने कहा "अपने बल पर जीते राजाओं को तुम्हारे भय से छोड़ दूँ? मुझसे युद्ध करने की इतनी इच्छा है, तो जाओ, सेनाएँ ले आओ। तुममें से किसी एक से या तीनों से युद्ध करने के लिए मैं सदा सन्नद्ध हूँ।" उसने अपने पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक किया और युद्ध के लिए सन्नद्ध होकर लौट आया।

कृष्ण ने कहा "हममें से जिससे युद्ध करना चाहते हो, कर सकते हो।"

अपने बल पर जरासंध को गर्व था, विश्वास था। उसने भीम को चुनौती दी। उसने अपना मुकुट निकाला, केश बाँध लिये और भीम पर टूट पड़ा। दोनों, दो हाथियों की तरह मल्लयुद्ध करने लगे। नगर से असंख्य जन यह युद्ध देखने आये। भयंकर यह युद्ध कार्तिक शुक्ल पाड्यमी के दिन प्रारंभ हुआ और त्रयोदशी तक चलता रहा। चतुर्दशी के दिन जब कृष्ण ने देखा कि जरासंध में अब युद्ध करने की शक्ति नहीं रही तो उसने भीम से कहा "भीम, जरासंध की शक्ति अब क्षीण हो गयी है। उसे मार डालो।"

कृष्ण की इन बातों से भीम में उत्साह उमड पड़ा। उस दिन जरासंध को बड़ी

सुगमता से अपने वश में कर लिया और उसे तोड़कर मार डाला। भयंकर रूप से सिंहनाद करते हुए वह उसके शव को खींचता हुआ राज मुखद्वार पर लाकर फेंक दिया।

तदनंतर कृष्ण, भीम और अर्जुन कारागार गये और वहाँ क़ैद राजाओं को छुड़ाया। गिरिव्रज के ब्राह्मणों ने उन्हें आशीर्वाद दिया। जेल से छूटे राजाओं ने कृष्ण की सराहना की। कृष्ण ने उनसे कहा "धर्मराज राजसूय यज्ञ करनेवाला है। आप सभी को उसका साथ देना होगा।" उन्होंने खुशी से अपनी सम्मति दी।

जरासंध का बेटा सहदेव भेटें लेकर पुरोहित समेत आया। कृष्ण ने उसकी भेटें स्वीकार की और उसे मगध का राजा घोषित किया।

फिर जरासंध के रथ पर भीम और अर्जुन को बिठाकर कृष्ण निकल पड़ा। विमुक्त राजा भी उनके साथ-साथ आये। अति शीघ्र इंद्रप्रस्थ पहुँचकर कृष्ण ने धर्मराज से कहा "भगवान की कृपा से तुम्हारे दोनों भाई सकुशल लौटे हैं। मल्लयुद्ध में जरासंध भीम के हाथों मरा। ये सब जरासंध के क़ैदी राजा हैं।" धर्मराज ने उन सब राजाओं का उचित आदर-सत्कार किया और उन्हें अपने-अपने देश भेज दिया। फिर कृष्ण जरासंध के रथ में ही बैठकर द्वारका चला गया।

कुछ दिनों के बाद अर्जुन ने धर्मराज से कहा "मेरे पास दिव्य गांडीव है, अग्निदेव का दिया हुआ रथ है, असाधारण युद्ध के साधन हैं। मैं दिग्विजय यात्रा पर जाऊँगा और राज्य का ख़ज़ाना भरूँगा।"

धर्मराज को अपने भाई की बातों पर बहुत आनंद हुआ। उसने दिग्विजय यात्रा के लिए एक शुभ दिन निकाला और अर्जुन को उत्तरी दिशा में, भीम को पूर्वी दिशा में, दक्षिण में सहदेव को, पश्चिमी दिशा में नकुल को भेजा। धर्मराज राज्य-भार संभालता रहा।

उत्तरी दिशा की ओर सेना सहित गये. अर्जुन ने पहले पहल पुलिंद राज्य पर आक्रमण किया। उसने राजा को आसानी से हरा दिया। अनर्त, कालकूट, कुलिंद, सुमंडल आदि राज्यों को अपने हस्तगत किया। महापराक्रमी शाकल द्वीप का राजा प्रतिबिंध्य को भी अर्जुन ने हराया। प्राग्योतिष के राजा भगदत्त के परिवार में किरात और चीनी रहते थे। भगदत्त ने अर्जुन से आठ दिनों तक युद्ध किया और अपनी हार मान ली।

अर्जुन ने भगदत्त से कहा "हमारे अग्रज धर्मराज राजसूय यज्ञ करके साम्राज्य की स्थापना करनेवाले हैं। उसके लिए विपुल धन-राशि चाहिये। हमें धन दीजिये। इसके अलावा मुझे और कुछ नहीं चाहिये।" भगदत्त ने उसे विपुल धन दिया और प्रणाम किया। अर्जुन ने बहुत-से राजाओं को हराया और उनसे धन वसूल किया, भेंटें स्वीकार कीं। गंधर्वों को जीतने के बाद उत्तरी कुरू देशों में से हरिवर्ष नामक एक देश में प्रवेश किया। उसने उसे देश को जीतना चाहा, पर वहाँ के द्वारपालकों ने अर्जुन से कहा "इस देश को जीतना तुम्हारे बस की बात नहीं। अच्छा यही होगा कि तुम लौट चलो।"

दीर्घ शरीरधारी तथा महावीर लगनेवाले उन द्वारपालकों ने अर्जुन से, अपने देश के बारे में यों कहा "इस नगर में प्रवेश करनेवालों को यहाँ कुछ नहीं दीखेगा। मनुष्य का शरीर सहित इस नगर में प्रवेश पाना असंभव है। पूछो, तुम्हें क्या चाहिये? हम देंगे।"

अर्जुन ने द्वारपालकों से कहा कि धर्मराज यज्ञ करनेवाले हैं और उन्हें धन चाहिये। द्वारपालक तुरंत ही अनंत धन, रत्न, हीरे, रंगबिरंगे कंबल, हिरणों के विचित्र चर्म आदि ले आये और उसे दिया। इस प्रकार अर्जुन ने उत्तरी दिशा पर विजय पायी और प्राप्त धन-राशि तथा अन्य वस्तुओं को ख़जाने में रखवा दिया।

सेना सहित पूर्वी दिशा की ओर गये भीम ने पांचाल राजा का सहयोग व प्रशंसा पायी। मिथिलापति को युद्ध में हराया। दशार्ण राजा सुंधन्व से युद्ध किया, उसके पराक्रम की प्रशंसा की और उसे अपना सेनापति बनाया। फिर उसने रोचमान और उसके भाइयों पर विजय पायी। पुलिंद, सुकुमार और सुमित्र को हराकर चेदि देश पहुँचा।

शिशुपाल चेदि देश का राजा था। जब उसे मालूम हुआ कि धर्मराज साम्राज्य स्थापित करने के लिए यज्ञ कर रहा है तो वह बहुत ही प्रसन्न हुआ। भीम को कुछ दिनों तक अपने ही घर पर रखा और निकलते समय उसने उसे अनंत धन-राशि दी।

वहाँ से निकलकर भीम अनेकों राजाओं को हराता हुआ मगध देश आया। वहाँ के राजा सहदेव से बहुत-सा धन लिया और उसकी सहायता से पांड्कवासुदेव तथा अनेकों पर विजय पायी। समुद्रीतट के संपन्न मनुष्यों से उसने युद्ध किया और सोना, चाँदी, मोती, रत्न, चंदन, सुगंध द्रव्य, हीरे-जवाहरात आदि लेकर इंद्रप्रस्थ पहुँचा।

दक्षिण की ओर गये सहदेव ने शूरसेन, मत्स्य देश के निषाद आदि पर विजय पायीं। अपने मामा कुंतिभोज से मिला और उससे अपार धन लिया। सहदेव ने और बहुत-से देशों पर विजय पायी। जब वह माहिष्मती के राजा नील के साथ युद्ध करने लगा तो उसकी सेनाएँ जल जाने लगीं।

इसका एक कारण है। माहिष्मती नगर के राजा नील ने एक बार अपनी पुत्री का उपयोग, अग्नि-कार्य के लिए किया। अग्निदेव उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गया और ब्राह्मण का रूप धरकर आया। नील ने ब्राह्मण को दंड दिया। अग्निदेव ने अपना निजी रूप धारण किया और प्रत्यक्ष हुआ। नील ने अग्नि को साष्टांग नमस्कार किया और क्षमा-भिक्षा
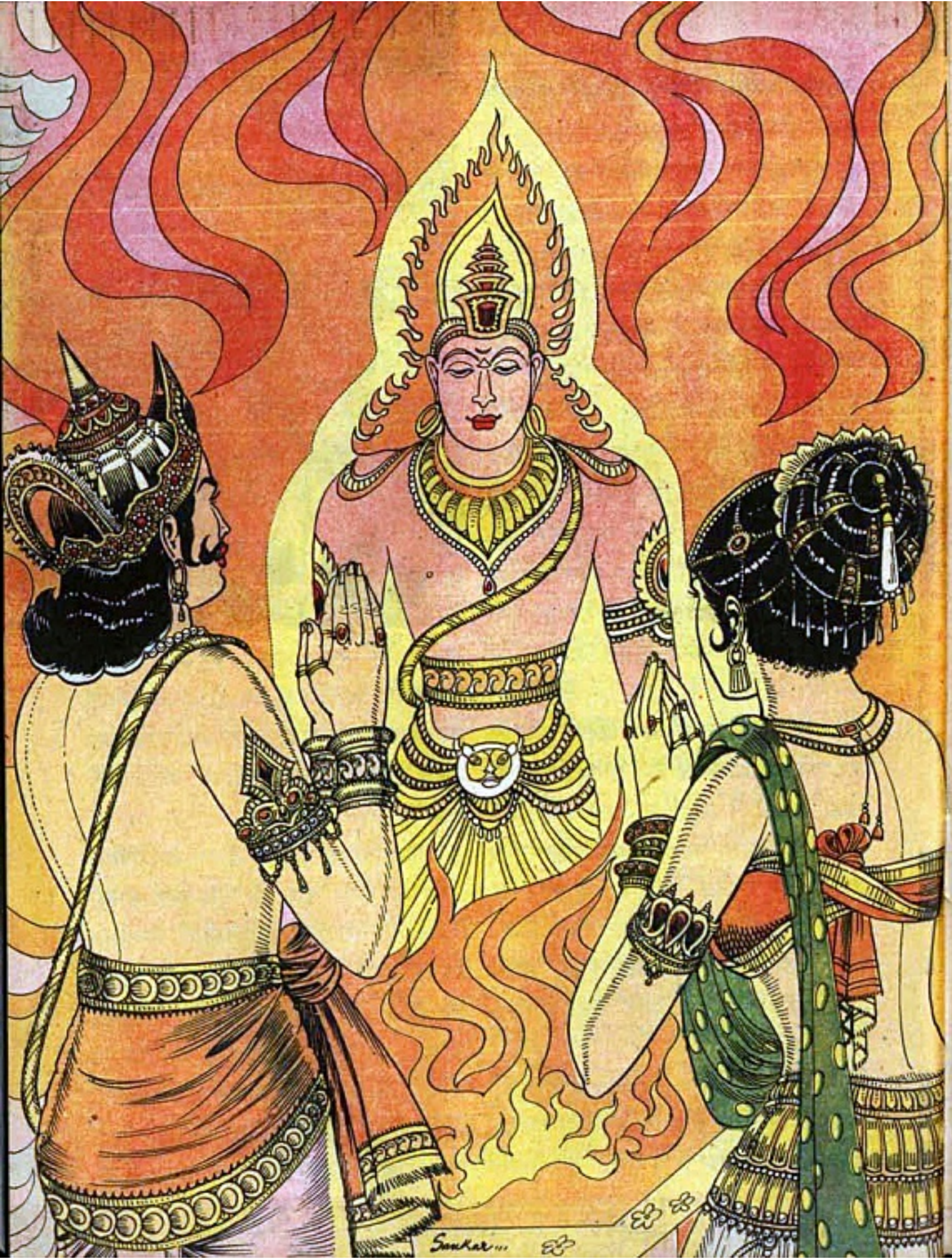
माँगी। बाद उसने अपनी पुत्री का विवाह अग्नि से शास्त्रोक्त पद्धति से किया। उसने अग्निदेव से वरदान पाया कि उसे या उसके नगर को शत्रुओं से कोई भय नहीं होगा। तब से जब कभी भी शत्रुसेनाएँ माहिष्मति पर आक्रमण करती हैं, दग्ध हो जाती हैं।

सहदेव ने कुशासन पर बैठकर होम किया और अग्नि की स्तुति की। अग्नि प्रसन्न हुआ और सहदेव का परिचय नील से किया। नील ने सहदेव को बहुत-सा धन दिया।

सहदेव दक्षिण में गया। कलिंग, ओंद्, तथा आँध्र में दूत भेजकर उन्हें अपने वश कर लिया। समुद्री तट पर विभीषण से बहुत-सा धन वसूला।

इंद्रप्रस्थ से पश्चिमी दिशा में गये नकुल ने रोहितक देश के राजा मयूर पर विजय पायी। वहाँ से निकलकर उसने शैरीषक, महेत्व्ध देशों को अपने वश में किया। दशार्ण, शिबि, त्रिगर्त, अंबष्ठ, मालव देश के राजाओं ने उसके हाथों हार खायी। इतर अनेकों देशों को जीतता हुआ नकुल आगे बढ़ता गया और कृष्ण को अपने आगमन का संदेश भेजा। फिर उसने मुद्रदेश में प्रवेश किया, शाकलपुर पहुँचा और अपने मामा शल्य को अग्रज धर्मराज के राजसूय यज्ञ के विवरण दिये। शल्य बहुत खुश हुआ और नकुल को विस्तृत धन-राशि तथा वाहन दिये।

समुद्र-मध्य के कितने ही देशों को नकुल ने जीता। कृष्ण जिन देशों को पहले जीत चुका था, उनपर फिर से उसने विजय पायी। धन-राशि के साथ इंद्रप्रस्थ लौटा।

चारों भाइयों के लाये गये धन से धर्मराज, वरुण व कुबेर से भी अधिक संपन्न हो गया। इस संपदा के आधार पर उसने राजसूय यज्ञ करने का निर्णय लिया। मंत्रियों ने भी यह कहकर उसे प्रोत्साहित किया कि राजसूय यज्ञ करने का यही सुअवसर है।

'चन्दामामा' की ख़बरें

पेड़ की शादी पेड़ से

यह शीर्षक विचित्र लगता होगा ना? क्या लगता है कि यह कैसे मुमकिन है? यह घटना सचमुच केरल के पालघाट ज़िले के मलकुलं में घटी। इसके बारे में हम पूरा जानना चाहें तो हमें तेरह सालों के पीछे जाना होगा। केलन नामक किसान और वेलप्पन नामक प्रधानाध्यापक दोनों दोस्त थे। उन दोनों ने गाँव की सरहद पर बरगद का और नीम का एक-एक पौधा रोपा। उन दोनों ने आपस में निश्चय किया कि वे दोनों उनके बेटे और बेटी के समान हैं। जब ये बड़े होंगे तब इन दोनों की शादी की जाए। दोनों दोस्त उन पौधों को पानी देते और खाद डालते। तेरह साल गुज़र गये। दुर्भाग्यवश वेलप्पन मर गया। पर, केलन ने बड़ी ही सावधानी से उन्हें पाला-पोसा। उस प्रांत में लोगों का विश्वास है कि बरगद का पेड़ शिव का अंश है तो नीम का पेड़ परशुराम की माँ रेणुकादेवी का अंश। इसलिए लोगों में भी इन दोनों पेड़ों के प्रति भक्ति-भावना थी। किन्तु कुछ लोगों ने रास्ते की रुकावट कहकर इन्हें काट देना चाहा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। लोगों ने निर्णय लिया कि इन दोनों की शादी करायी जाए। शादी के दिन दोनों पेड़ों को पुष्पमालाओं से अलंकृत किया। स्थानीय पुजारी ने पूजाएँ कीं और मंगल वाद्यों की ध्वनियों के बीच नीम के पेड़ को सोने का मंगलसूत्र पहनाया। शादी की दावत में चार सौ से अधिक लोगों ने भाग लिया। केलन ने अपने दोस्त को दिया वचन निभाया। इस दृश्य को देखकर उसकी आँखों में खुशी के आँसू आ गये।

सामान्यों की सवारी

तीस-चालीस साल पहले साइकिल ग़रीबों की सवारी मानी जाती थी। मोटरकार या मोटर साइकिल का उपयोग संपन्न लोग ही करते थे। इसके बाद स्कूटर का प्रवेश हुआ, जो मध्यवर्ग के लोग ही रख पाते थे। ये इटली से लाये गये। इसके बाद छोटी मोटरकारें आयीं, जिनका उपयोग चंद लोग ही कर पाते थे। इतना सब कुछ होते हुए भी साइकिलों की तैयारी १९७० से बढ़ती ही जा रही है। १९९४ में संसार भर में ११०,०००,००० साइकिलों का निर्माण हुआ। इनमें से ४२,००,०० साइकिलें चीन में बनीं। साइकिलों के निर्माण में हमारे देश का दूसरा स्थान है। साइकिलों का अधिक बनने का कारण यों है। इनका उपयोग आसानी से हो सकता है। इसको चलाने ईंधन की ज़रूरत नहीं है, इसलिए वातावरण कलुषित नहीं होता। पेट्रोल से चलाये जानेवाले वाहनों को कुछ निर्णीत प्रदेशों में चलाने की अनुमति नहीं है। विश्व विद्यालयों के प्रांगणों में और कुछ ऐसे प्रदेशों में जहाँ उद्योग हैं, उन्हें चलाना मना है। ४०० शहरों में पुलिस तथा डाकियों को साइकिलें दी गयी हैं। अब रही हमारे देश की बात। पूना, हैदराबाद, दिल्ली नगरों में साइकिलों का अधिकतर उपयोग होता है।

कदंब वृक्ष

विष्णु का वाहन गरुड, स्वर्ग से अमृत कलश अपनी नाक में दबोचे ले आ रहा था। रास्ते में विश्राम लेने एक कदंब वृक्ष के नीचे बैठा। कहा जाता है कि जब वह अपनी नाक को कदंब वृक्ष के तने से रगड़ रहा था, तब थोड़ा-सा अमृत उस तने पर गिरा। कदंब सुदीर्घ काल तक बचा रहता है। क़रीबन तीन सौ सालों तक यह जीवित रहता है। हमारे पुराण बताते हैं कि इसकी लंबी आयु का यह एक कारण है।

सुगंधि फैलानेवाले कदंब के फूल बालकृष्ण को बहुत ही भाते थे। वे वृंदावन में मुरली बजाते हुए गोपिकाओं के साथ इन्हीं कदंब वृक्षों के तले विचरते थे।

ऋतुपवन के पूर्व ही कदंब में बौर आती है। सुदृढ़ डंडी में सोने की गेंदों की तरह चार-पाँच फूल विकसित होते है। इसके पत्ते पके हरे रंग के होते हैं।

ये कदंब वृक्ष अधिकतर समुद्री तटों तथा निचले हिमालय प्रांतों के मैदानों में पाये जाते हैं। संस्कृत, हिन्दी, बंगाली, गुजराती, तेलुगु और मराठी भाषाओं में इसे 'कदंब' कहते हैं। कन्नड में 'कदबाला' मलयालम में 'अत्तुटेक' तमिल में 'वेह्लै' कहा जाता है।

कदंब वृक्ष से संबंधित एक और कहानी भी प्रचलित है। एक व्यापारी के घर के प्रांगण में कदंब वृक्ष हुआ करता था। उसके सात बेटे थे। सबसे छोटा बेटा सदा इसी वृक्ष के नीचे बैठा करता और बाँसुरी बजाया करता था। पिता व्यापार के कामों पर जब सुदूर प्रांतों में गया, तब उसके बड़े भाइयों ने छोटे भाई पर नाराज़ होकर उस वृक्ष को काट डाला। दुखी छोटा भाई बाँसुरी बजाता हुआ पास ही के जंगल में चला गया। वापस आये पिता को जब यह बात मालूम हुई, तब उसे बहुत दुख हुआ। इसके बाद उसकी संपदा भी शनैः शनैः घटने लगी। व्यापारी के इष्टदेव सपने में दिखायी पड़े और कहा कि छोटे लड़के के वापस आने पर ही फिर से तुम्हारा भाग्य चमकेगा। पिता अपने लड़के को ढूँढ़कर ले आया। व्यापारी का परिवार पुनः संपन्न हो गया।

हमारे देश के ऋषि :

जाबाला सत्यकाम

अरण्य से होती हुई एक नदी प्रवाहित होती थी। उस नदी की पश्चिमी दिशा में गौतम मुनि का आश्रम था। वे उस आश्रम में चंद शिष्यों को विद्याएँ सिखाया करते थे। सुदूर से आये हुए शिष्य गुरुकुल में ही रहते थे।

शिष्य सूर्योदय के पहले ही जागते थे। स्नान आदि समाप्त करने के बाद सूर्य को नमस्कार करते थे। गुरु के साथ बैठकर एकाग्र चित्त हो वेदमंत्रों का पठन करते थे।

नदी की पूर्वी दिशा से एक छोटे बालक ने यह दृश्य देखा। उन्हीं का नाम है सत्यकाम। वे अपनी माँ जाबाला के साथ झोंपड़ी में रहते थे। वे जंगल में लकड़ियाँ काटते और नगर में उन्हें बेचकर अपना पेट भरते थे।

एक बार जब सत्यकाम स्नान करने नदी में आये तो उन्होंने देखा कि आश्रम में शिष्य पठन में मग्न हैं। घर वापस आने पर उन्होंने अपनी माँ से यह बात बतायी और कहा "माँ मेरी भी इच्छा है कि मैं उन बालकों के साथ मिलकर पढ़ूँ। कहो कि मैं क्या करूँ?"

"माँ जाबाला ने कहा "जाओ और उसी मुनि से पूछो।" सत्यकाम नदी में तैरता हुआ दूसरे किनारे पर पहुँचा।
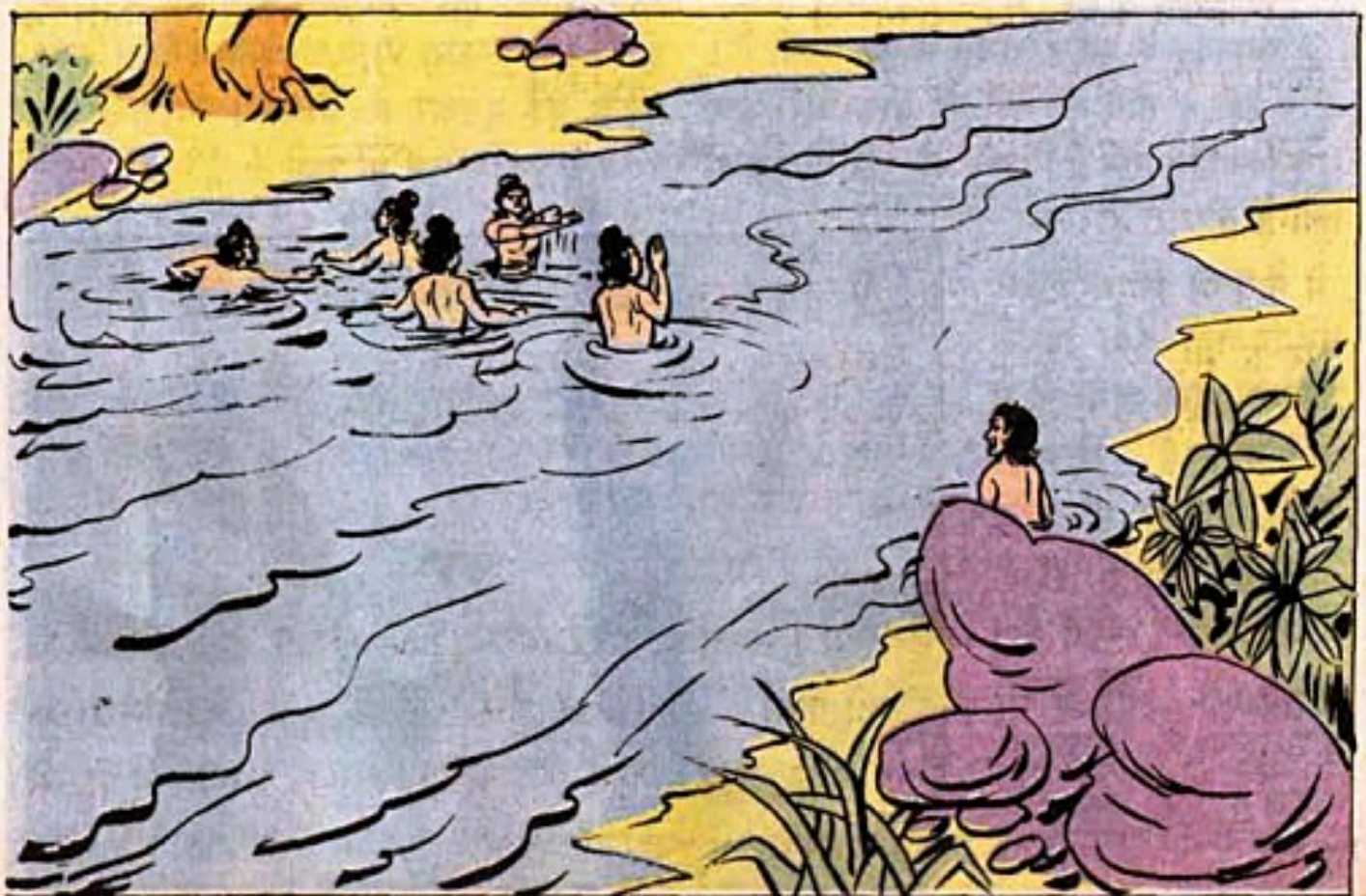
आश्रम में जाकर उन्होंने मुनि को प्रणाम किया और सविनय कहा "महोदय, मुझे अपना शिष्य बनाइये और विद्या प्रदान कीजिये।"

मुनि ने उनके कुल-गोत्र के बारे में पूछा। सत्यकाम ने कहा "मैं नहीं जानता।"

मुनि ने पूछा "तुम्हारे पिता का क्या नाम है?"

"यह भी मैं नहीं जानता। मैं अपनी माँ के साथ ही रहता हूँ। पिता को कभी भी देखा ही नहीं।" सत्यकाम ने उत्तर दिया।

मुनि ने कहा "तो अपनी माँ से पूछकर आना कि तुम्हारे पिता का क्या नाम है?"

सत्यकाम ने घर आकर अपनी माँ से प्रश्न किया। एक क्षण मौन रहकर जाबाला ने कहा "बेटे, तुम्हें जन्म देने के पहले कुछ लोगों के घरों में काम करती थी। एक घर में जब मैं काम किया करती थी तब उसी घर में मेरी ही तरह काम करते हुए एक पुरुष से मैंने शादी की। विवाह होने के बाद उस यजमान के परिवार के साथ वह भी एक दुर्घटना में मर गया। मैं वह गाँव छोड़कर चली आयी। तुमने यहीं जन्म लिया। मैं तो अपने पति का नाम भी जान नहीं पायी।"

सत्यकाम फिर से मुनि के पास आये और बिना छिपाये सारा वृत्तांत मुनि को बताया। पूरा सुनने के बाद गौतम ने मुस्कुराकर कहा "जो सदा सत्य बोलता है, वही सच्चा ब्राह्मण है। तुमने सत्य ही कहा, अतः तुम भी ब्राह्मण ही हो।" उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दिया।

जाबाला सत्यकाम ने मुनि के यहाँ रहकर विद्याएँ सीखीं। उत्तम शिष्य कहलाये गये। बाद वे एक उत्तम गुरु हुए। बड़ी ख्याति पायी।

सत्यकाम की कथा से हमें ज्ञात होता है कि वेदकाल में कुल का निर्धारण जन्म से नहीं, बल्कि उसके गुणों से होता था।

क्या तुम जानते हो ?

१. समीलिया का पूर्व नाम क्या है?
२. ई.स. ५० वें वर्ष में ईसाई धर्म का प्रचार हमारे देश में किसने किया?
३. सुप्रसिद्ध ईजप्ट की रानी क्लियोपात्रा ईजप्ट की नहीं थीं तो फिर किस देश की थीं?
४. पहले जब बाडमेंटन हमारे देश में खेला जाता था तब उसका एक और नाम था।
   वह नाम क्या है?
५. यहूदियों के पवित्र ग्रंथ का नाम क्या है?
६. हमारे देश में सर्वप्रथम स्थापित पोलो क्लब का क्या नाम है? कब स्थापति हुआ?
७. द्वितीय विश्व-युद्ध के प्रारंभ में इटली का तानाशाह कौन था?
८. क्रीडाओं में निष्णात व्यक्तियों को हमारे देश में पुरस्कार दिया जाता है? उसका क्या नाम है?
९. प्रथम 'ओलिंपैड' कहाँ हुआ ? आधुनिक ओलंपिक क्रीडाएँ पहले पहल कहाँ हुई?
१०. नाश होते हुए सस्तन जंतु हमारे देश के किस प्रांत में हैं?
११. सब रंगों के आधार हैं तीन रंग। उनका क्या नाम है?
१२. विख्यात वह मुगल सम्राट कौन हैं, जिन्हें जनता ने 'मानव संरक्षक' कहा?
१३. भूमि से गये मनुष्यों का अंतरिक्ष में कब समावेश हुआ?
१४. सुप्रसिद्ध रूसी रचयिता कौंट लियो टालस्टाय के जन्म-स्थल का क्या नाम है?
१५. १८२६, जुलाई ४ को दो अमेरीकी अध्यक्ष एक ही दिन दिवंगत हुए। वे कौन थे?
१६. हमारे देश में राष्ट्रों का फिर से विभाजन कब हुआ?
१७. यूरोप की सबसे लंबी नदी का क्या नाम है?
१८. रेल के डब्बों को बनाने की 'इंटेग्रल कोच फाक्टरी' कहाँ है ?

उत्तर

१. नैरुति अफ्रीका
२. सैंट थामस
३. मेसडोनिया (ग्रीस)
४. पूना
५. टोरा
६. असम का काचर क्लब
७. बेन्टिरो मुसोलिनी
८. अर्जुन पुरस्कार
९. प्रथम ओलंपैड ई.स. ७७६, आधुनिक ओलेपिक क्रीडाएँ एथेन्स में १८९६ में हुई।
१०. हि॰
११. लाल, ना।
१२. अकब
१३. १९६५, दिसंबर, १५
१४. यादनाया पालियाना
१५. जान आडम्स, थामस जाफर्सन
१६. १९५६
१७. ओल्गा नदी
१८. मद्रास के पेरंबूर में

महावीर की ज़िद

कीर्तिचंद्र उत्पल देश का राजा था। उसकी बेटी पद्मावती अति सुंदरी थी। जब वह शादी के लायक़ उम्र की हो गयी तो राजा उसके योग्य वर को ढूँढ़ने में लग गया। इन प्रयत्नों के बीच में ही एक दिन पद्मावती अचानक ग़ायब हो गयी।

सेवकों और परिचारकों ने अंत:पुर पूरा ढूँढ़ डाला। राजकुमारी कहीं दिखायी नहीं पड़ी। तब राजपुरोहित ने अंजन ड़ालकर देखा और कहा "युवरानी पद्मावती को कोई राक्षस उठाकर ले गया है। वह भयंकर जंगल में एक अद्‌भुत दुर्भेद्य भवन में रह रहा है। वह बहुत ही शक्तिशाली है। आज से ठीक तीन महीनों के बाद पद्मावती से शादी करनेवाला है।"

यह सुनकर राजा हताश हो गया। समझ में नहीं आया कि क्या करना चाहिये। मंत्री ने राजपुरोहित से कहा "महाशय, अंजन डालिये और देखिये कि राजकुमारी को बचाने का कोई मार्ग है?"

पुरोहित ने नकारात्मक भाव में सिर हिलाते हुए कहा "जो हुआ और जो होनेवाला है, वही अंजन में देखा जा सकता है। चूँकि राक्षस ने पद्मावती से शादी की बात की, इसीलिए मैं यह बात जान सका। अलावा इसके, और तीन महीनों तक अंजन का उपयोग नहीं हो सकता।"

तब मंत्री ने राजा से कहा "प्रभू, चिंतित होने से कोई फ़ायदा नहीं। हम कुछ करने की स्थिति में नहीं हैं। यह मानकर तृप्त हो जाएँ कि जो हुआ और जो होगा, सब हमारी भलाई के लिए ही हुआ और होगा। घोषणा कीजिये कि जो राजकुमारी को राक्षस से बचायेगा, उसकी शादी राजकुमारी से करायी जायेगी। आगे भगवान पर भरोसा रखें।" मंत्री ने यों

कृष्ण गोस्वामी

चुका था । जो भी वहाँ आता, उसे वह चुनौती देता और कहता "ऐसे बड़े राक्षस से टक्कर लेना किसी सामान्य व्यक्ति के बस की बात नहीं है । पहले मुझे हराओ और फिर अरण्य में क़दम रखो ।"

कोई भी वीर उसे हराकर आगे बढ़ नहीं पाता था । धीरे-धीरे उस अरण्य की ओर आनेवाले वीरों की संख्या घटती गयी ।

गुप्तचरों के द्वारा राजा को इसकी ख़बर लगी । महावीर के बारे में जब उसने जानकारी पानी चाही तो उसे मालूम हुआ कि उसका पिता सेना में काम करता था और लड़ते-लड़ते युद्ध-क्षेत्र में मर चुका था । पिता की मृत्यु के बाद उसने देश छोड़ दिया और कहीं चला गया । वहाँ उसने कई विद्याएँ सीखीं और महान शक्तिवान बनकर लौटा । कीर्तिचंद्र स्वयं महावीर की माता से मिलने गया । महाराज के अपने घर आने पर वह घबरा गयी ।

"तुम्हारा बेटा राजद्रोही है । इसका कारण जानने के लिए मैं तुमसे मिलने आया हूँ ।" कीर्तिचंद्र ने गंभीर स्वर में कहा ।

"प्रभू, हमारा वंश राजभक्तों का वंश है । राजद्रोह की कल्पना भी हम नहीं कर सकते । राजवंश के लिए हम प्राण भी न्योछावर करने सदा तैयार रहते हैं । आपका आरोप सच्चा नहीं है ।" महावीर की माता ने स्पष्ट किया ।

सलाह दी ।

कीर्तिचंद्र को यह सलाह अच्छी लगी । फ़ौरन उसने घोषणा की "भयंकर अरण्य में रहनेवाले राक्षस ने राजकुमारी का अपहरण किया है । तीन महीनों में वह उससे शादी भी करेगा । उसके पहले ही राक्षस के चंगुल से राजकुमारी को बचाकर जो ले आयेगा, उसकी शादी राजकुमारी से होगी ।" यह घोषणा सुनते ही देश के कितने ही वीर युवक बड़े ही उत्साह के साथ अरण्य की ओर गये ।

भयंकर अरण्य दुर्गम था । उसमें प्रवेश क़रने के लिए एक ही मार्ग था । वहाँ उत्पल देश का एक महावीर पहले ही पहुँच

राजा को उसके जवाब से तसल्ली नहीं हुई। उसने कहा "तो बताओ कि तुम्हारा बेटा जंगल में प्रवेश करने से वीरों को क्यों रोक रहा है ? मेरी बेटी को बचाने के प्रयत्नों को विफल करने की कोशिश क्यों कर रहा है?"

महावीर की माता ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "राजन्, मेरा बेटा बड़ा शक्तिशाली है। उसका सामना करने की शक्ति इस भूमि पर किसी को नहीं है। जगह-जगह घूमकर उसने ये शक्तियाँ पायीं। राक्षस को मारने के लिए मेरे पास आशीर्वाद लेने आया। मैंने उसे आशीर्वाद भी दिया। किन्तु आपकी बातों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया।"

कीर्तिचंद्र को लगा कि उसकी बातों में सच्चाई है। राजभवन पहुँचकर उसने मंत्री से सलाह-मशविरा किया।

मंत्री ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा "आज तक कोई भी वीर महावीर को जीत नहीं सका। नाम के अनुरूप ही वह महावीर है। हम उससे एक बार समक्ष मिलें तो उत्तम होगा। हम उससे मिलेंगे बहुरूपिये बनकर।"

राजा और मंत्री गाँव के ग़रीब किसानों की तरह उस भयंकर अरण्य के मुखमार्ग पर गये। उन्होंने देखा कि महावीर सचमुच ही महावीर है।

राजा ने उससे पूछा "तुम यहां क्या कर रहे हो?" "उत्पल के वीरों की परीक्षा ले रहा हूँ" महावीर ने कहा।

"यह काम तो राजा का है। सेनाधिपति साधारणतया यह काम संभालता है। उत्पल के वीरों की परीक्षा लेने की तुम्हें क्या ज़रूरत?" राजा ने पूछा।

महावीर ने बिना हिचकिचाये कहा "इस अरण्य में एक राक्षस है। वह बड़ा शक्तिशाली है। साधारण लोग उसे मार नहीं सकते। उसका सामना जो करते हैं, उन्हें वह आसानी से खा जाता है। उत्पल के वीरों को मौत से बचा रहा हूँ।"

"क्या मालूम कि वे वीर राक्षस को

मारने की शक्ति रखते हों? तुम कैसे बता सकते हो कि वे उसके हाथों मारे जाएँगे?" राजा ने पूछा ।

महावीर इसपर हँस पड़ा और बोला "यह जानने के लिए थोड़ा-सा लोकज्ञान पर्याप्त है । जो मुझे हरा नहीं सकते, वे राक्षस को कैसे मार पायेंगे ?"

राजा ने 'हाँ' कहते हुए आगे कहा "यह तो ठीक है । तो क्या राक्षस को मारनेवाला हमारे राज्य में है ही नहीं?"

"क्यों नहीं, मैं ही उसे मार सकता हूँ ।" महावीर ने कहा । "तो फिर देरी क्यों? तुम्हीं जाओ और उस राक्षस को मार डालो । यहाँ खड़े होकर सबको रोकते रहने से क्या फ़ायदा?" राजा ने पूछा ।

"यह काम तो पहले ही कर सकता था । पर, हमारे राज्य के महाराज के कारण यह काम कर नहीं पा रहा हूँ ।" कहकर वह अपनी कहानी बताने लगा ।

महावीर का पिता चंद्रसेन जब युद्ध में मरा था, तब वह पाँच साल का था । उसकी माँ हर दिन अपने पति के पराक्रम की प्रशंसा करती और कहती "युद्ध में इतना बड़ा वीर अनाथ की तरह मर गया । मेरी चाह है कि तुम इतना शक्तिवान बनो कि युद्ध में तेरी मौत ही ना हो ।"

माँ की इन बातों ने महावीर पर अमिट छाप डाली । बचपन से ही उसने युद्ध-विद्याएँ सीखीं । अपने सत्रहवें साल में उसने माँ से कहा "माँ, मैं हिमालय जाऊँगा । वहाँ मुनिगणों की सेवाएँ करके मंत्र-तंत्र सीखूँगा । आशीर्वाद दो ।" माँ का आशीर्वाद पाकर वह निकल पड़ा ।

हिमालयों में महावीर की इच्छा पूरी हुई । वहाँ उसे एक मुनि ने मंत्र-तंत्र सिखाया और कहा "पुत्र, इस भूमि पर कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो तुम्हें हरा सके । किन्तु पहली बार जब मानवातीत शक्ति से जूझने जाओगे, तब अवश्य ही अपनी माँ का आशीर्वाद पाना । इसके बाद तुम्हारा सामना करने की शक्ति किसी में नहीं होगी ।"

लौटते हुए महावीर का सामना लुटेरों के एक झुंड से हुआ। पास ही के गाँव में चंद्रिका नामक एक सुन्दर कन्या है। लुटेरों का सरदार उसपर फ़िदा हुआ। वे लुटेरे सब मिलकर उस लड़की को तथा उसके माँ-बाप को ज़बरदस्ती ले जा रहे थे। साथ ही एक पुरोहित भी था, जो उनकी शादी करायेगा। कुल मिलाकर बीस लुटेरे थे। महावीर उनपर टूट पड़ा और उन्हें भगाया।

तब चंद्रिका के पिता ने महावीर से कहा "बेटे, शादी के लिए जिस क्षण हम घर से निकले, उसी क्षण से हमारी बेटी परायी हो गयी। उसकी शादी किये बिना हम घर नहीं लौट सकते। किसी को मुँह दिखाने के लायक़ नहीं रहेंगे। हम कन्या-दान करेंगे। पुरोहित शादी करायेगा। तुम चंद्रिका को स्वीकार करो।"

महावीर जान गया कि चंद्रिका भी उसे चाहने लगी है। वहीं चंद्रिका से विवाह कर लिया। दोनों उत्पल राज्य की ओर निकले। रास्ते में एक राक्षस दिखायी पड़ा और कहा "शाबाश, कितनी सुंदर लड़की है। यह मुझे बहुत अच्छी लगी है। इसे मैं अरण्य के अपने भवन में ले जा रहा हूँ। तुमसे हो सका तो मुझे रोक।"

तब मुनि की चेतावनी महावीर को याद आयी। उसने महावीर से कहा था कि माँ के आशीर्वाद के बिना मानवातीत शक्ति से जूझना मत। महावीर ने राक्षस से कहा

"मैं तेरा सामना करूँगा, पर मुझे थोड़ा-सा समय चाहिये।"

राक्षस ने विकट रूप से हँसते हुए कहा "बहुत ही जल्दी एक ही दिन में, मैं नौ मानव कन्याओं से ब्याह रचने जा रहा हूँ। उस समय तक आ सकोगे तो आ" कहकर वह चंद्रिका को जबरदस्ती ले गया।

महावीर उत्पल देश पहुँचा। उसने सोचा कि शादी की बात कहने से माँ घबरा जायेगी, इसलिए उसने यह बात माँ से छिपायी। माँ से उसने राक्षस का सामना करने के लिए आशीर्वाद माँगा। इसी समय राजा की घोषणा सुनकर वह मुसीबत में पड़ गया।

"इसमें मुसीबत कैसी? तुमने जो चाहा, राजा ने भी तो वही चाहा।" मंत्री ने पूछा।

"घोषणा के अनुसार जो राजा की बेटी को छुड़ायेगा, उसके साथ राजकुमारी का विवाह होगा। मैं तो शादी-शुदा हूँ। अलावा इसके, मैं एकपत्नीव्रती हूँ।" महवीर ने कहा।

राजा उसकी सादगी तथा निष्कपटता पर चकित होता हुआ बोला "इतनी सी छोटी बात पर यह ज़िद क्यों? यह बात राजा से बताते तो वे ही कोई इंतज़ाम करते।"

"मालूम नहीं, ऐसा करता तो क्या होता? मैं जानना भी चाहता था कि उत्पल में क्या कोई ऐसा वीर है, जो राजकुमारी को बचा सके।" महावीर ने कहा।

राजा उसके विनय पर प्रसन्न हुआ और बता दिया कि मैं ही राजा हूँ। बाद राजा ने अपनी घोषणा में परिवर्तन किया, जिसके अनुसार यह कोई ज़रूरी नहीं है कि राजकुमारी के रक्षक को उससे शादी करनी ही होगी। घोषणा में बताया गया कि विजेता को मुँह माँगा इनाम मिलेगा।

कुछ ही दिनों में महावीर ने राक्षस को आसानी से मार डाला। अपनी पत्नी की रक्षा की। राजकुमारी को बचाया और उसे उसके पिता के सुपुर्द किया। राजा कीर्तिचंद्र महावीर की सफलता पर बहुत ही खुश हुआ और उसे अपनी सेना में उन्नत पद दिया।
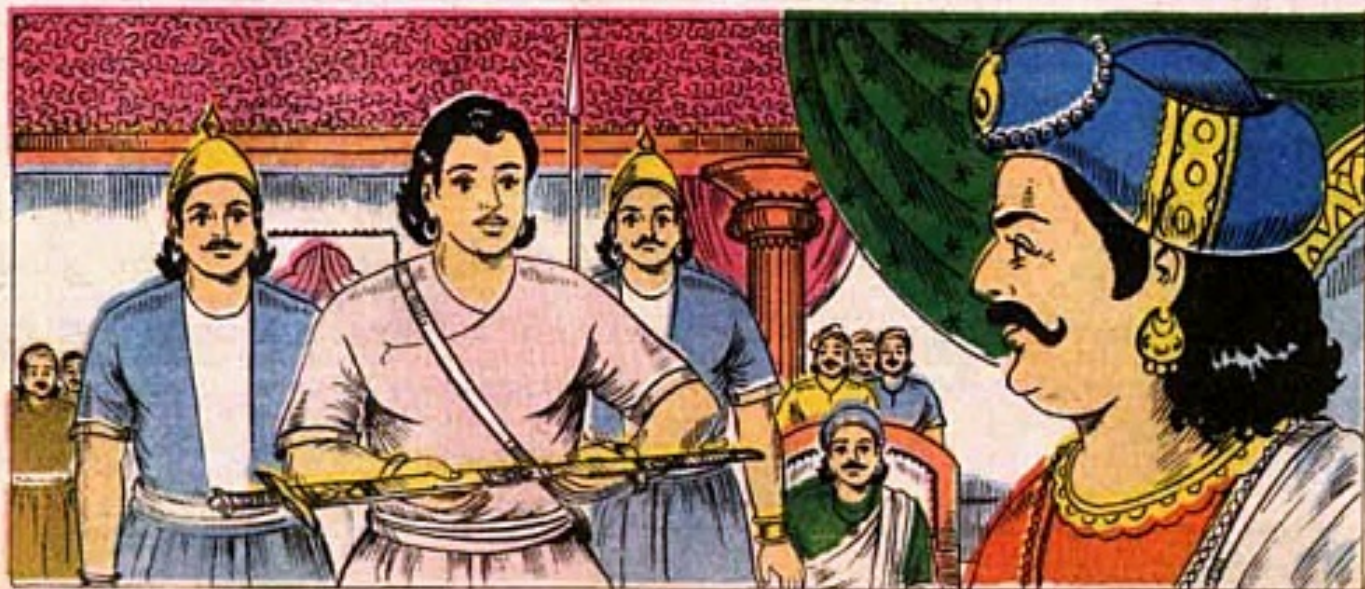
रमानाथ की अक़्लमंदी

घोषित हुआ कि चंचलपुर के निकट वज्रों की खान है। दूर-दूर से वहाँ वज्रों के पारखी आये। खानों में काम करनेवाले बहुत से मज़दूर और वज्रों को काटने में निपुण कितने ही लोग वहाँ आकर बस गये। इस कारण वहाँ रहने के लिए घर मिलते नहीं थे।

इन परिस्थितियों में रमानाथ उस गाँव में आया। किराये के घर के लिए घूमते-घूमते उसके पैर घिस गये। आख़िर उसे मालूम पड़ा कि कहीं एक घर है। उस घर के मालिक की शर्त थी कि माहवार किराया पाँच सौ होगा और साल पूरा होते ही घर खाली करना होगा। रमानाथ को यह शर्त ठीक नहीं जँची। उसने तो सोचा था कि घर में रहूँगा और हर महीने किराया चुकाता रहूँगा। लेकिन उसने कल्पना ही नहीं की थी कि मालिक शर्त रखेगा कि साल के बाद घर खाली करना होगा।

रमानाथ ने घर के मालिक से कहा "अपने गाँव में मेरे दो घर हैं। उसमें से एक घर किराये पर दिया है। किन्तु आपकी तरह ऐसी शर्त हम नहीं रखते। यह तो सरासर अन्याय है। आप यह बताइये कि साल पूरा होने के बाद अगर मैं घर खाली नहीं करूँगा तो आप क्या कर लेंगे ?"

"इसमें अन्याय क्या है? मैं अभी तो नहीं बता सकता कि घर की आवश्यकता कब होगी। मैं भी बड़े परिवार का हूँ। मुझे मालूम हुआ कि शहर में छोटा-सा व्यापार करनेवाला मेरा दामाद परिवार सहित यहाँ आकर बस जाना चाहता है। इसलिए पहले से ही सावधान न रहूँ तो घर खाली कराना मेरे लिए मुश्किल हो जायेगा। अभी हम दस्तावेज़ बना लेंगे। उसके अनुसार आपने घर खाली नहीं किया तो एक साल के बाद हर महीने आपको दो हज़ार रुपयों का

किराया देना होगा ।'' घर के मालिक गुरुनाथ ने कहा ।

रमानाथ थोड़ा नाराज़ होता हुआ बोला ''आपके कहे मुताबिक लगता है कि आपका दामाद एक साल के अंदर यहाँ नहीं आनेवाला है । अगर इस बीच उसके आने की कोई गुंजाइश होती तो यह घर आप मुझे किराये पर नहीं देते । है ना? साल पूरा होने के बाद भी आपको ज़रूरत नहीं पड़ी तो मुझे ही रहने देंगे । है ना?''

''खुशी-खुशी दूँगा । आपको छोड़कर किसी और को क्यों दूँगा? तब नया दस्तावेज़ बना लेंगे? मंजूर है?'' गुरुनाथ ने पूछा । दोनों ने उसी प्रकार लिखा-पढ़ी कर ली ।

रमानाथ परिवार सहित उस घर में रहने लगा । ग्यारह महीने आराम से कट गये ।

गुरुनाथ ने एक दिन रमानाथ से कहा ''आप हर महीने निश्चित दिन पर किराया चुकाते हैं । मैं आपसे बहुत खुश हूँ ।''

''इतना अच्छा घर रहने के लिए मुझे मिला, इसकी मुझे भी बहुत खुशी है । ऐसा लगता है कि अपना गाँव भूल जाऊँ और यहीं पर हमेशा के लिए रह जाऊँ'' रमानाथ ने कहा ।

उसकी इस बात से गुरुनाथ चौकन्ना हो गया और घबराते हुए कहा ''क्या कह रहे हैं? हमारे समझौते की बात भुला दी?''

''नहीं । आपकी शर्तें मुझे अच्छी तरह से याद हैं । क्या आपको घर की ज़रूरत आ पड़ी? आपका दामाद शहर से क्या आनेवाला है?'' रमानाथ ने पूछा ।

''ऐसी कोई बात नहीं । अगले महीने से घर का किराया होगा छे सौ रुपये । आपको मंज़ूर हो तो नया दस्तावेज़ बना लेंगे, नहीं तो आपको घर खाली करना होगा ।'' गुरुनाथ ने स्पष्ट कहा ।

गुरुनाथ की इन बातों को सुनकर रमानाथ को लगा मानों उसके सर पर बिजली गिरी । थोड़ी देर तक वह स्तब्ध रहा । फिर अपने को संभालकर उसने कहा ''यह तो बड़ा अन्याय है । एक ही साल में सौ रुपयों का बढ़ावा । पच्चीस रुपये बढ़ा दीजिये । कम से कम इतना

तो एहसास हो जायेगा कि दुनिया में अब भी इन्साफ़ ज़िन्दा है। मेरी बात आप नहीं मानेंगे तो किराया घटाने के लिए मुझे जो करना है, करूँगा।''

उसकी बातों पर नाराज़ गुरुनाथ ने कहा ''मुझे जो कहना है, मैंने कह दिया। फिर आपकी मर्ज़ी।'' वह वहाँ से फ़ौरन चला गया।

रमानाथ की पत्नी उन दोनों की बातें सुन रही थी। उसने अपने पति से कहा ''बेकार की यह तक़रार क्यों? ऐसे तो इस गाँव में किराये पर देने घर बहुत कम हैं। हमें कोई नया घर मिलेगा भी नहीं। हम मुश्किलों में फंस जाएँगे। ज़िद पर अड़े मत रहिये। किराया घटाना आपसे हो नहीं सकता, इसलिए चुपचाप नया दस्तावेज़ बनवा लीजिये।''

गुरुनाथ अपनी बात पर अड़ा रहा। रमानाथ ने भी घर खाली नहीं किया। साल के पूरा हो जाने के बाद भी और एक महीना वहीं रहा। उस एक अदने महीने के लिए उसने दो हज़ार रुपये चुकाये। बाद उसने नया दस्तावेज़ लिखवा लिया और हर महीने छे सौ रुपये चुकाने लगा।

''यह दस्तावेज़ एक महीने पहले ही लिखवा लेते, तो दो हज़ार चुकाने की नौबत ही न आती। अनावश्यक चौदह सौ रुपये ज़्यादा दे दिये।'' रमानाथ की पत्नी दुखी होती हुई बोली।

इसपर रमानाथ ज़ोर से हँसता हुआ बोला ''पगली, मेरी चालाकी तुम्हारी समझ में नहीं आयी। पहले ही लिखा-पढ़ी हो जाती तो मतलब हुआ कि माहवार किराये में सिर्फ़ एक सौ की ही बढ़ौती हुई। पर मैंने तो एक महीने के बाद ही उसकी शर्त मानी। इससे गुरुनाथ की आमदनी में चौदह सौ का घाटा हुआ। इसपर वह परेशान होगा, दुखी होगा, अंदर ही अंदर घुलता रहेगा। जान-बूझकर ही मैंने ऐसा किया।''

रमानाथ की पत्नी को मालूम नहीं हो पाया कि पति की ऐसी अक़्लमंदी पर रोना है या हँसना है ?
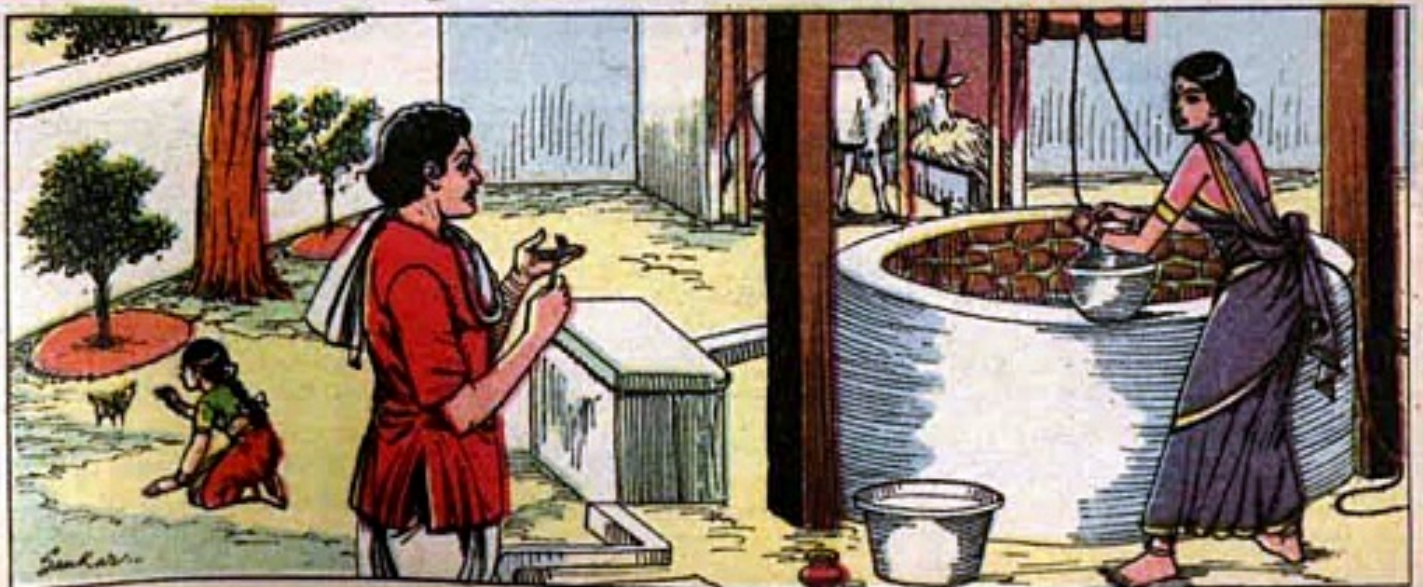
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, जून, १९९६ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

Mohantesh C. Morabad

Shrikant Amrute

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० अप्रैल, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

फ़रवरी, १९९६, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **बानर करते खुसुर-पुसुर**

दूसरा फोटो : **मुन्नी देखे टुकुर-टुकुर**

प्रेषिका : **कु. निधि कटारे**

पो.ब.नं. ६१, मिशन चौक कटनी, पो. मध्य प्रदेश - ४८३ ५०१.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adapting

THE MOST ENDEARING GIFT YOU CAN THINK OF
FOR YOUR NEAR AND DEAR WHO IS FAR AWAY

CHANDAMAMA

Give him the magazine in the language of his choice—
Assamese, Bengali, English, Gujarati, Hindi, Kannada,
Malayalam, Marathi, Oriya, Sanskrit, Tamil or Telugu
—and let him enjoy the warmth of home away from home.

Subscription Rates (Yearly)

AUSTRALIA, JAPAN, MALAYSIA & SRI LANKA

By Sea mail Rs.**117.00** By Air mail Rs. **264.00**

FRANCE, SINGAPORE, U.K., U.S.A.,
WEST GERMANY & OTHER COUNTRIES

By Sea mail Rs. **123.00** By Air mail Rs. **264.00**

Send your remittance by Demand Draft or Money Order favouring 'Chandamama Publications' to:

CIRCULATION MANAGER **CHANDAMAMA PUBLICATIONS** CHANDAMAMA BUILDINGS
VADAPALANI MADRAS 600 026

JUST RELEASED

The first set of **Chandamama Books,** splendid in their content, illustrations, and production, is now ready.

Rs. 30/-

Rs. 40/-

The Golden Deer

Rs. 30/-

Rs. 30/-

Rs. 25/-

A Strange Prophecy
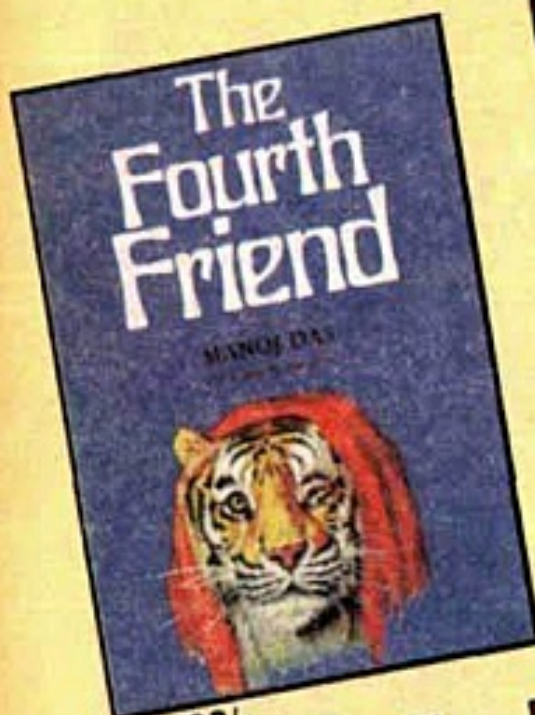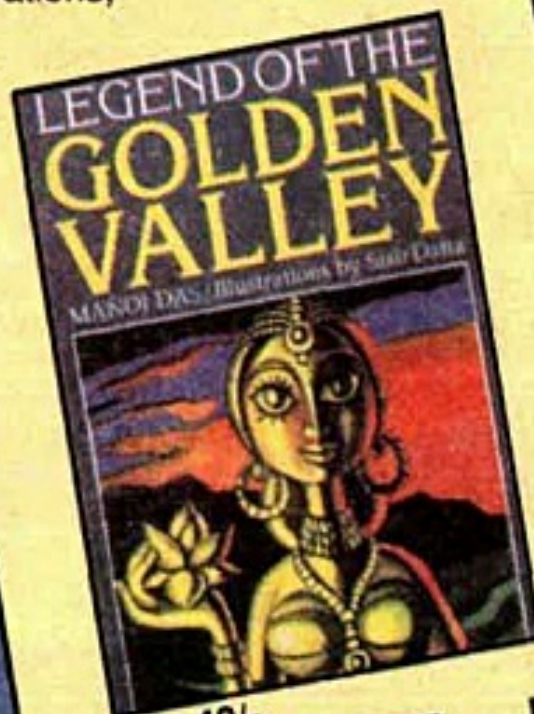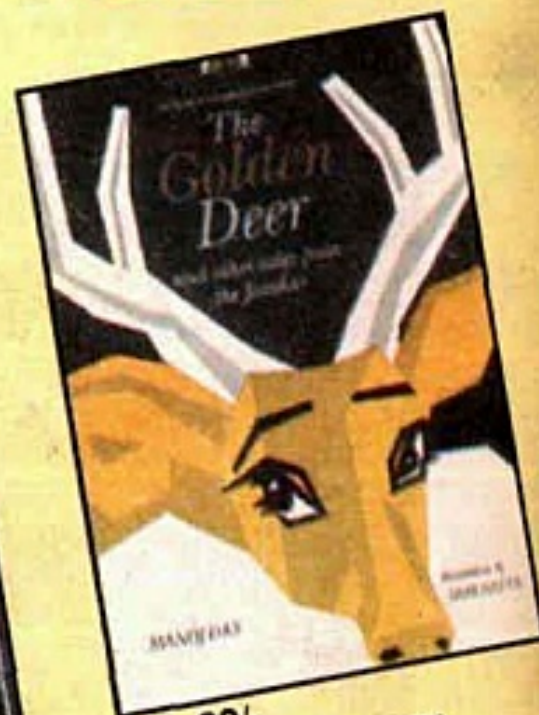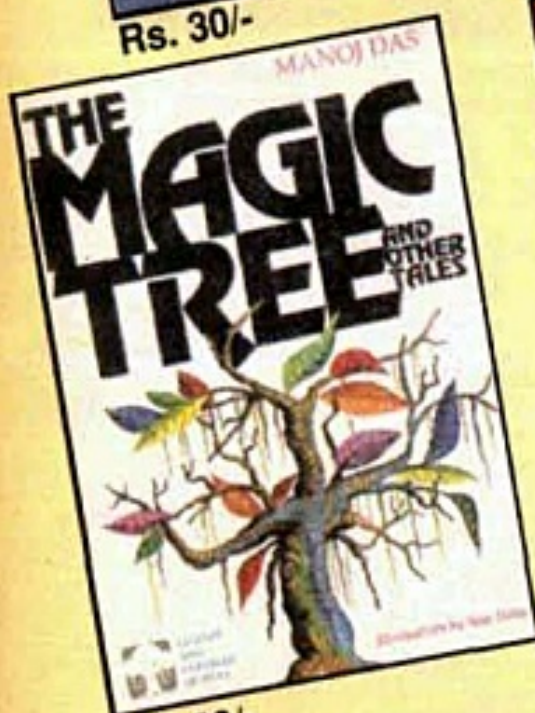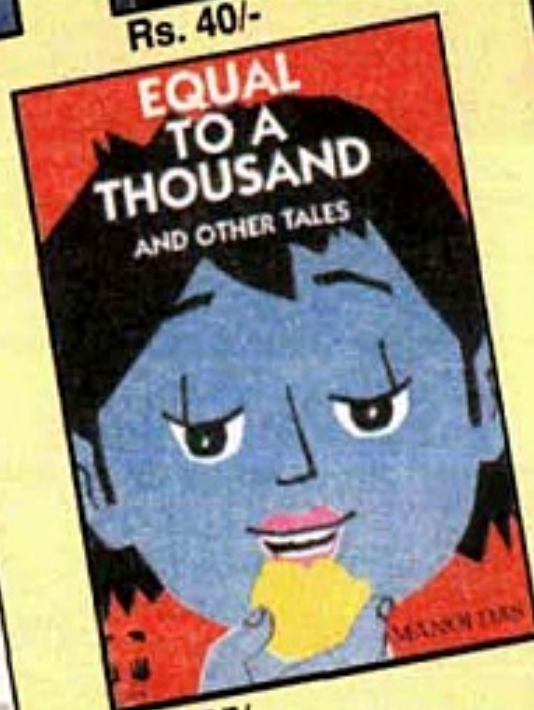
Rs. 30/-

Discount for members of **Chandamama Young Scholars Club.** Look inside for details. Or write to :

CHANDAMAMA BOOKS
Chandamama Bldgs.
Vadapalani, Madras - 600 026.